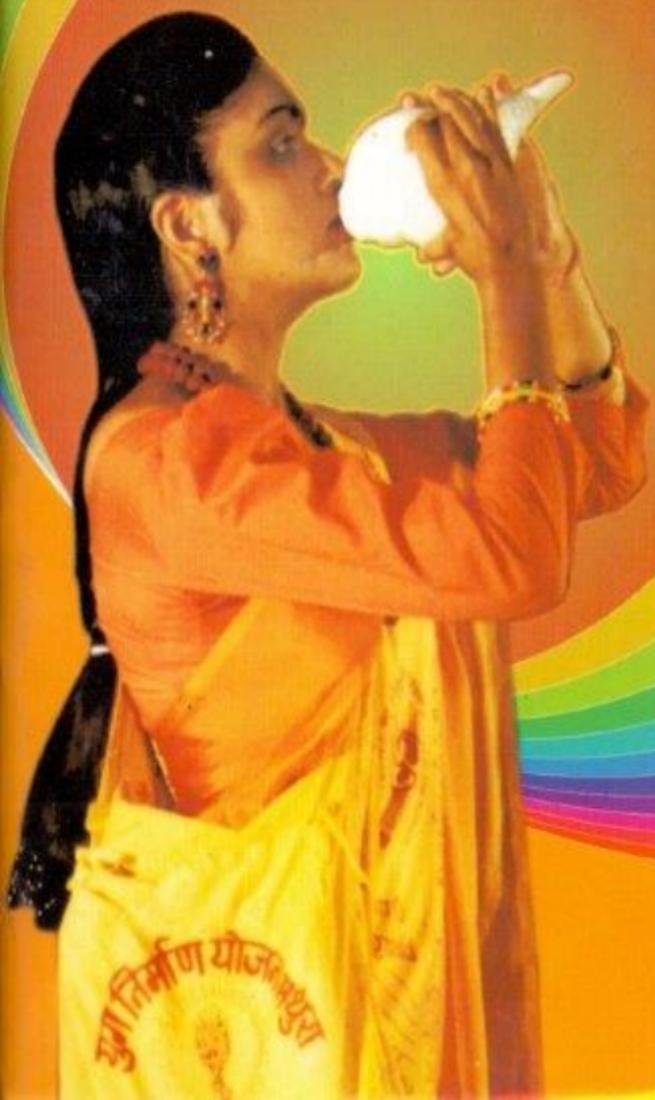


# प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ



श्री लीलापुराण प्रोजेक्ट

# प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ



संकलन-संपादन :

विचारक्रांति अभियान



प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट  
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९  
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९  
फैक्स नं०- २५३०२००



पुनरावृत्ति सन् २०१०

मूल्य : ९.०० रुपये

## आत्मीय-अनुरोध

युग ऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने इक्कीसवीं सदी को नारी सदी कहकर जाग्रत नारियों को अपने वर्ग के साथ-साथ समाज के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आह्वान किया है। यह नारी-जागरण की बेला है। इस समय इक्कीसवीं सदी का ब्रह्ममुहूर्त है। ऋषिसत्ता ने हमें पुकारा है, युग देवता की पुकार को सुनकर तदनुसार कार्य कर, श्रेय-सम्मान पाने का सुअवसर प्राप्त करें। जातीय सम्मान की रक्षा एवं उत्थान के लिए ईश्वरप्रदत्त विभूतियों को नियोजित करके राष्ट्र-देवता के चरण में श्रद्धा-सुमन समर्पित करने चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक युगऋषि के विचारों के द्वारा प्रसुप्त लेकिन प्राणवान एवं श्रद्धावान बहनों के अंदर प्रबल प्राणतत्व का संचार करेगी, उनके प्रमाद, तंद्रा एवं निंद्रा को दूर कर युग की पुकार सुनने को बाध्य करेगी। संपन्न दानवीरा बहनों को यह पुस्तक अधिक-से-अधिक संख्या में मँगाकर अपने परिकर की समर्थ, योग्य एवं भावनाशील बहनों को देनी एवं पढ़ानी चाहिए। महिला गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में यह पुस्तक सबको वितरित करनी चाहिए। यह पुस्तक हर जाग्रत नारी के हाथ में दिखाई दे ऐसा प्रयास होना चाहिए। महिला-जागरण का उद्घोष किया जा रहा है। यह आंदोलन पश्चिम के 'वीमेन लिब' से सर्वथा भिन्न है। बहनों को संगठन बनाकर यह आंदोलन पूरी शक्ति के साथ चलाना चाहिए, ताकि महिला उत्थान की आँधी का आभास सभी को हो सके। पुस्तक के अंत में संलग्न संकल्प-पत्र भरकर सभी बहनों को यहाँ भेजना चाहिए ताकि समय-समय पर प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। युग निर्माण योजना मासिक पत्रिका सभी बहनों को अवश्य पढ़नी चाहिए ताकि दिशाधारा से अवगत होती रहें।

व्यवस्थापक  
युग निर्माण योजना, मथुरा

# प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ

सृष्टि—सुजन का आदिक्रम चला, देव और दानवों से अधिक बल और शक्ति मनुष्य को प्राप्त हुई। मानव हर क्षेत्र में इनसे बढ़कर था। विद्या, बुद्धि, धन, वैभव में मनुष्य ही अग्रणी था। जब भी वह इच्छा करता दानवों और देवों को परास्त कर डालता। मानव की शक्ति से उन दिनों सभी भयभीत रहते थे।

एक दिन देव-दानवों ने सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी से शिकायत की—“आपने मनुष्य को इतना सशक्त बनाया है कि वह सबको भयभीत रखता है। उसकी शक्ति के आगे किसी की नहीं चलती। समस्त धरती का वैभव उसके हाथ में है, हम लोग केवल उसके आश्रित रह गए हैं। हमें वह अधिकार दीजिए, जिससे हम भी स्ववश जी सकें, मनुष्य से डरने की बात का अंत आप ही कर सकते हैं।”

ब्रह्माजी ने विचार किया और उत्तर दिया—“जब तक मनुष्य को मानवी ‘नारी’ की शक्ति मिलती रहेगी, वह अजेय है, अजेय रहेगा, हम उसके लिए कुछ नहीं कर सकते।” देव-दानव चले गए। कालांतर में मनुष्य अहंकार से भरकर नारी शक्ति की उपेक्षा करने लगा, तब से मनुष्य निःशक्त हो गया और देव तथा दानव प्रबल होते गए।

सामाजिक संगठन, समुन्नति की प्रेरक भी नारी है। राष्ट्र का यश, सौभाग्य और लक्ष्मी भी वही है। जिस देश और जाति में नारी का पूज्य स्थान होता है, वही देश और जातियाँ गौरव प्राप्त करती हैं, सिर ऊँचा उठाकर स्वाभिमान के साथ अमर रहती हैं।

ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मांततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः ।  
अनाव्याधां देवपुरां प्रपद्य शिवा स्योना पतिलोके वि राज ॥

—अथर्ववेद १४/१/६४

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ / ३

“हे मनुष्य ! पत्नी के पीछे ब्रह्म (उच्चता, महानता) हो, आगे ब्रह्म हो और मध्य में ब्रह्म हो । इस प्रकार ब्रह्म से सर्वत्र घिरी हुई वह पति हृदय में राज्य करे ।”

सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तू का कथन है—“नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है ।”

भाव और चरित्र की दृष्टि से नारी वर्ग पुरुष से बहुत ऊँचा है । गांधी जी ने कहा है—“स्त्री और पुरुष में चरित्र की दृष्टि से स्त्री का आसन ज्यादा ऊँचा है, क्योंकि आज भी वह त्याग, मूक तपस्या, नम्रता, श्रद्धा और ज्ञान की मूर्ति है । पुरुष पहले ही अहंकारपूर्वक यह मान लेता है कि स्त्री की अपेक्षा उसका ज्ञान अधिक ऊँचा है, लेकिन अक्सर उसकी स्वाभाविक सूझ पुरुष के इस ज्ञान से ज्यादा सिद्ध हुई है । राम से पहले सीता और कृष्ण से पहले राधा नाम का उल्लेख स्त्री चरित्र की प्रबलता का परिचायक है ।”

मानव शक्ति का जागरण ही विश्व परिवर्तन का आधार है । नारी विधेयात्मक शक्ति है । जो काम पुरुष शक्ति-तांडव द्वारा करता है, नारी उसे सहज स्नेह, सरल और सौम्यतापूर्वक संपन्न कर लेती है । युग परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूर्ण करने के लिए उसी को जगाना चाहिए, उसी को बढ़ाना चाहिए और विश्व शांति के उपयुक्त वातावरण बनाने की उसी से याचना करनी चाहिए । नारी तत्त्व को प्रतिष्ठित-पूजित किए बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता । आज अपने देश में अगणित समस्याएँ पग-पग पर छाई हुई हैं, उन्हें सुलझाने में देश की नारियाँ महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं । वस्तुतः किसी भी उथ्थान का हेतु वहाँ की महिलाओं की त्याग और तपश्चर्या ही होती है ।

नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है । नारी की अपनी विशेषता है—उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति । बेटी, बहन, धर्मपत्नी और माता के रूप में वे परिवार के लिए जिस प्रकार उद्दात्त आदर्शों से भरा-

पूरा जीवनयापन करती हैं, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा। नारी को प्रजनन का उत्तरदायित्व उठाने के कारण शारीरिक दृष्टि से थोड़ा दुर्बल भले ही रहना पड़ा हो, पर आत्मिक अनुभूतियों की बहुलता को देखते हुए वही ईश्वरीय दिव्य अनुकंपा की अधिक अधिकारिणी बनी है। अगले दिनों द्रुतगति से बढ़ता आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्मिक मान्यताओं से भरापूरा होगा। मनुष्यों का चिंतन, दृष्टिकोण उसी स्तर का होगा, व्यवस्थाएँ और मान्यताएँ उसी ढाँचे में ढलेंगी, जनसाधारण की गतिविधियाँ उसी दिशा में उन्मुख होंगी, शासनतंत्र, धर्मतंत्र, समाजतंत्र और अर्थतंत्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुनर्निर्मित होगा। ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निभानी पड़ेंगी। विशेष उत्तरदायित्व सँभालने पड़ेंगे, कारण कि अध्यात्म की विभूतियाँ जन्मजात रूप में उसी को अधिक परिमाण में उपलब्ध हुई हैं।

नवयुग का नेतृत्व नारियाँ ही करेंगी, परंतु उससे पूर्व अपनी पात्रता सिद्ध करनी है, अपनी शक्ति-सामर्थ्यों का परिचय देना है। मजबूत कंधे ही भार वहन करने में समर्थ हो सकते हैं।

### नारी जागरण की आवश्यकता :

नारी की अपनी एक गरिमा है। वह पुरुष की जननी है। हम परमेश्वर के पश्चात् सर्वाधिक ऋणी अगर हैं तो नारी के, क्योंकि प्रथम परमात्मा मानव जीवन देता है, किंतु द्वितीय मातृशक्ति नारी हमें जीने योग्य बनाती है। नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह पुरुष की निर्मात्री है। किसी राष्ट्र का उत्थान नारी जाति के उत्थान से ही होता है। वर्तमान समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन में नारी के सहयोग की अति आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करने वाली माँ ही है। समाज के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए उसे मनुष्य रूप में विकास करने का समान अधिकार दिया जाए, तभी वह भावी

**प्रबुद्ध नारियाँ आगे आँँ / ५**

पीढ़ी का निर्माण दक्षतापूर्वक कर सकेगी और समाज का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा। समाज का आधा अंग महिला से बनता है, वह केवल पुरुष की अद्धारिती ही नहीं है, वरन् समाज का आधा अंग है। समाज के उत्थान-पतन में उसकी समान भूमिका है। समाज उन्नत बनाना है, तो नारी को भी पुरुष के समान शिक्षित, सभ्य और प्रबुद्ध बनाना होगा। विचारवान, ज्ञानी, साहसी, आत्मबल से संपन्न महिला परिवार, समाज में अपने उत्तरदायित्वों को भलीभौति निवाह सकेंगी।

श्रेष्ठ व्यक्तियों से श्रेष्ठ समाज बनता है। आज समाज में प्रतिभाशाली व्यक्तियों की कमी हो रही है। उसके लिए मातृशक्ति की मनोगत अवस्था उत्तरदायी है। अगले दिनों प्रतिभावान महापुरुषों की राष्ट्र को आवश्यकता पड़ेगी। वह वर्तमान पीढ़ी में से ही निकलेंगे। अतः मातृशक्ति को जाग्रत, सक्षम, आत्मबल से संपन्न और योग्य बनाने से ही वह सहयोग मिलेगा।

नारी परिवार की सूत्र संचालिका है। माता, पत्नी, बहन, बेटी के रूप में वही गृहलक्ष्मी समाज को नररत्न देती है। समाज को स्वर्ग में बदलना नारी के हाथ में है। सृष्टि ईश्वर ने बनाई है, परंतु नारी परिवार को स्वर्ग बनाती है तथा देवमानव अपने उदर से उगाती है, धरती माँ अन्न दे सकती है, पर मानव वह भी उत्पन्न नहीं कर सकती। नारी मास्ट्रा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। उसकी विशेषताओं को गिनाएँ तो मानव जगत उसके अनुदानों के नीचे दब जाएगा। त्याग, प्रेम, स्नेह, सम्मान, सहयोग, सहनशीलता नारी में नर से अधिक है। सारा परिवार, समाज नारी के सहयोग और सेवा से गतिशील है। मास्ट्रा की सहयोगिनी शक्ति का नाम नारी है।

कन्प्यूशियस का कथन है—समाज को सुधारना है तो परिवारों को सुधारो परिवारों का सुधार तथा सुसंस्कृत परिवारों का निर्माण अच्छी माताएँ ही कर सकती हैं।

---

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएं / ६

सुसंस्कृत परिवार की धुरी है—प्रगतिशील व सुसंस्कृत नारी। यह हजार बार ध्यान देने योग्य बात है कि पुरुष अर्थ उपार्जन की, सुविधा-साधन जुटाने की व्यवस्था कर सकता है, पर घर में स्वर्गीय वातावरण पैदा करने की उसकी स्थिति नहीं है। न समय, न अनुभव, न भावना, न कला और न उदारता। इन आधारों के बिना परिवार संस्था का भावनात्मक नवनिर्माण संभव नहीं हो सकता।

भावी पीढ़ी के शरीर अच्छी खुराक से, मस्तिष्क शिक्षा से विकसित किए जाते हैं, पर चरित्र व संस्कारयुक्त दृष्टिकोण का निर्माण परिवार की पाठशाला में नारी के शालीन अध्यापन के बिना अन्य किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता।

नारी जागरण का उद्देश्य पूरा करने हेतु पाँच सूत्री कार्यक्रम (नारी उत्थान का घोषणा पत्र) १. मानव समाज में न्याय को जीवंत रखना, २. परिवारों में शालीनता उत्पन्न करना, ३. भावी पीढ़ी को समुन्नत बनाना, ४. सर्वतोमुखी आर्थिक प्रगति में सहयोगी की भूमिका निभाना, ५. सद्भाव, सद्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन का आधार खड़ा करना।

### नारी उत्थान कैसे हो ?

नारी की संवेदना, क्षमता, योग्यता, आत्मबल कैसे जगाना है, उसी के उपाय करने हैं। मनोबल बढ़ाने के उपाय करने पड़ेंगे। मौलिक अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सम्मान के लिए सुविधाएँ मिलें। प्रचारात्मक, रचनात्मक, सुधारात्मक, संघर्षात्मक उपाय करने हैं। इन्हीं के द्वारा अज्ञान, असम्मान, उपेक्षा दूर होगी। एक सुसंस्कृत विकसित माँ, सम्मानित बहन-बेटी बनेगी। नारी को खोया वर्चस्व प्राप्त होगा, अवांछनीयता से मुक्त होगी, परिवार एवं राष्ट्र के लिए कुछ करने की क्षमता रखेगी, स्वयं को पहचानकर ऊपर उठेगी, पूर्वाग्रहों

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ। ७

को छोड़ने के लिए तैयार होगी, अर्थोपार्जन द्वारा अपनी तथा राष्ट्र की प्रगति में सहायक होगी, वर्ग चेतना जागेगी तो दूसरी बहनों को समर्थ बनाएगी।

नारी ही सामाजिक दायित्वों के बोझ को ढोती है, शिल्पी की तरह संतान को गढ़ती है। माँ, पत्नी, बहन, बेटी के रूप में प्रेम, समर्पण, त्याग, स्नेह देती है।

परमपूज्य गुरुदेव ने इक्कीसवीं सदी को नारी सदी कहकर नारी जाति को अपने वर्ग के साथ-साथ समाज के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आह्वान किया है। यह समय नारी जाग्रति का है, जो बहनें इस युगसंधि की विषम वेला में अपने समय को व्यर्थ के कार्यों में बरबाद कर देंगी, उन्हें बाद में पछताना होगा कि युगऋषि ने हमें समय पर पुकारा, लेकिन हमने उनकी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया।

नवजागरण की दिशा में नारी को बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है, यह बात अस्वीकार नहीं की जा सकती। अब नारी की दिव्य क्षमताओं को कसौटी पर कसे जाने की घड़ी आ पहुँची है। इस कसौटी पर नारी खरी उतरेगी भी, भले ही उसे इसके लिए दोहरा श्रम करना पड़े। उसे लंबे समय तक बंधनों में जकड़े रहने से पैदा हुए अपने पिछड़ेपन से मुक्ति पाकर अपनी योग्यता और क्षमता को विकसित करना होगा और नए निर्माण की भूमिका बनाने में भी हाथ बँटाना होगा। अपने विकास के लिए स्वयं अपने आप से संघर्ष करना होगा तथा मार्ग में रुकावट डालने वाली, परिवार और समाज में फैली रुद्धियों से भी निपटना पड़ेगा। यह सब कठिन अवश्य है, लेकिन नारी इसे अवश्य कर लेंगी, महाकाल ने उसे जो कार्य सौंपा है, उसे अपनी जन्मजात दैवी क्षमताओं के सहारे वह निश्चित रूप से पूरा कर सकती है। विचारशील पुरुष वर्ग का भी पूरा समर्थन एवं सहयोग उसे मिलना चाहिए और वह मिलेगा भी।

---

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ / ८

नारी जागरण की इस पुण्य वेला में प्रत्येक भावनाशील महिला को सक्रिय होना चाहिए। अभीष्ट परिवर्तन का एक पक्ष है—संघर्ष, दूसरा है—सृजन। हमें इन दोनों ही मोरचों पर अपने वर्चस्व का परिचय देना चाहिए। इस साहस के सहारे ही नारी को अपने तथा समूची मानवता के उज्ज्वल भविष्य का नवनिर्माण करना संभव हो सकेगा।

समय की पुकार नारी जागरण अभियान को आँधी-तूफान की तरह व्यापक बना देने की है। उसे दावानल की भाँति द्रुतगामी और गगनचुंबी बनना चाहिए। नारी अग्रिम मोरचे पर खड़ी जरूर होगी, पर उसे इसकी सफल भूमिका निभा सकने की स्थिति तक पहुँचाने के लिए पुरुष को अपने घरों की नारियाँ आगे बढ़ानी होंगी। प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, अवकाश देने से लेकर साधन जुटाने तक उसे परदे के पीछे रहकर पूरा-पूरा योगदान देना होगा। जनसाधारण के मस्तिष्क में नारी पुनरुत्थान की आवश्यकता, उपयोगिता बिठाने और उसे पद-दलित स्थिति में रखने की हानियाँ समझाने के लिए इतना बड़ा प्रचारतंत्र खड़ा करना पड़ेगा, जो शिक्षित और अशिक्षित नर और नारी सभी को वस्तुस्थिति समझा सके।

अपने घर-परिवार में जो महिलाएँ इस अभियान में कुछ योगदान कर सकती हों, उन्हें वस्तुस्थिति समझाएँ, कुछ करने के लिए उत्साह उत्पन्न करें और इतना अवसर प्रदान करें कि आंदोलन के कार्यों में कुछ समय लगा सकें। महिला जागरण का कार्य इतना महत्त्वपूर्ण है कि संघ शक्ति का उदय किए बिना और किसी शक्ति से संभव नहीं हो सकता। विचारशील व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि यह नारी उत्थान का कार्य तब तक नहीं हो सकेगा जब तक नारियों को घर के कार्यों से फुरसत नहीं दी जाएगी। जो महिला बिना संरक्षक के घर के बाहर कभी नहीं निकली, वह घर-घर जाकर संगठन के कार्य को कैसे करेगी ? फिर जिन घरों में जाएगी, शंका की दृष्टि से देखी जाएगी। इस प्रकार घर के लोगों की अप्रसन्नता का कारण भी

---

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ / ९

बनेगी। अतः पुरुष वर्ग अपने घर की स्त्रियों को झिझक छोड़ने की चर्चा चलाएँ। बहू-बेटियों को धीरे-धीरे घर से बाहर जाने की अनुमति प्रदान करें और प्रोत्साहन दें। अपने घर की महिलाओं को साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित होने की सुविधा दी जानी चाहिए। अतः पुरुष वर्ग को भी नारी जागरण का कार्य अपना ही कार्य मानकर अपनत्व भरे उमंग-उत्साह के साथ आगे बढ़ाना चाहिए।

देशव्यापी, विश्वव्यापी महिला जागरण अभियान चलाने के लिए उसका संगठनात्मक ढाँचा खड़ा करना आवश्यक है। संगठन के लिए आरंभिक प्रयासों में (१) साप्ताहिक सत्संगों की नियमितता (२) सदस्याओं के घरों पर जाकर जन्मदिन, संस्कार, पर्व, कथा आदि के आयोजन करके परिवार निर्माण का प्रशिक्षण (३) प्रौढ़ महिला पाठशाला तथा बाल संस्कारशाला का श्रीगणेश, ये तीन कार्य प्रमुख रखे गए हैं। जहाँ यह क्रम चल पड़ेगा, वहाँ बौद्धिक क्रांति, नैतिक क्रांति एवं सामाजिक क्रांति की दिशा में अन्य महत्वपूर्ण प्रचारात्मक, रचनात्मक कदम बढ़ाए जाते रहेंगे।

नारी प्रगति के नाम पर कुछ हुआ तो जरूर है, पर उसे दिशा न मिलने के कारण उच्छृंखलता की ही वृद्धि हुई है। शिक्षा तो बढ़ी, पर उसके साथ-साथ फैशनपरस्ती, श्रम से अरुचि एवं शालीनता की अवज्ञा जैसे दोष-दुर्गुण जुड़ गए। फलतः वह लाभ न मिल सका जो शिक्षा की वृद्धि के साथ मिलना चाहिए था। शिक्षित नारी को अपने वर्ग की प्रगति के लिए कुछ तप-त्याग करना चाहिए था, किंतु दिशा न मिलने के कारण वैसा दर्द उनके दिल में पैदा न हो सका। शिक्षित नारी अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा बढ़ाने तक ही सीमित हो गई है।

आज की शिक्षित नारी के कंधों पर दोहरा दायित्व आ पड़ा है। प्रथम तो स्वयं उन निरर्थक बंधनों, वर्जनाओं और रूढ़ियों को तोड़ना है, जो उनके अस्तित्व को ही निगल लेना चाहते हैं। दूसरे अपनी बहनों को जगाना है, उनकी उस सोई शक्ति को जगाना है, जिसके

जाग्रत हुए बिना नारी उत्थान, दूसरे शब्दों में समाज का उत्थान असंभव है।

नारी कैसे अपना खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त करे, जिसके बिना वह समानता के स्तर पर नहीं आ सकती, इसके लिए उसे बहुत बड़ा संग्राम लड़ना पड़ेगा। कई मोरचों पर उसे अपनी शक्ति लगानी पड़ेगी। इस मुक्ति संग्राम का शंखनाद कौन करे? सेना, हथियार और सैन्य-संचालन का महत्वपूर्ण दायित्व कौन निभाए? इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है—आज की शिक्षित नारी ही यह दायित्व उठा सकती है।

पुरुष का मुँह ताका जाए, इसकी अपेक्षा यदि हमारे समाज की शिक्षित महिलाएँ स्वयं ही आगे आएँ तो नारी जाति को रूढ़िवादिता की संकीर्णता से, अंधपरंपराओं के बंदीगृह से, अशिक्षा और अज्ञान के अंधकार से सरलतापूर्वक उबारा जा सकता है। परिस्थितियाँ उनके पक्ष में हैं, न्याय उनके आगे चल रहा है, फिर मात्र उनके अपने साहस भर की बात रह जाती है।

स्कूल और कालेज की शिक्षा प्राप्त को ही शिक्षित नहीं कहा जा सकता है। इसमें वे महिलाएँ भी शामिल की जाएँ जो पढ़ी-लिखी तो बहुत कम हैं, किंतु नारी कल्याण के लिए जिनके हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है। राष्ट्रीय आंदोलन में पढ़ी-लिखी नारी के अतिरिक्त सामान्य नारियों ने भी आंदोलन को सक्रिय रखने में पूर्ण सहयोग दिया है। नवजागरण को आगे रखने वाली नारी को भी साथ रखा जाए, चाहे वे स्कूल में दो-चार अक्षर नहीं पढ़ीं तो क्या हुआ?

कुछ महिलाएँ बड़े प्रशासनिक अधिकारियों के परिवारों से संबंधित होती हैं, उन्हें अध्यापक, डॉक्टर या अन्य प्रशासनिक सेवाओं में बड़े-बड़े पद सहज ही मिल जाते हैं। उनके सामने जीवन की समस्याएँ प्रायः नहीं होती हैं। मध्यम वर्ग की महिलाएँ जो स्कूलों में अध्यापिकाएँ, दफ्तरों में कलर्क, कंपनियों में टाइपिस्ट आदि पदों

पर कार्य करती हैं, इनके कंधों पर कार्य का बोझ दुहरा होता है। एक ओर नौकरी का दायित्व तो दूसरी ओर घर, संतान, पति का उत्तरदायित्व बना रहता है। ऐसी परिस्थिति में इन्हें जीवन में कठोर स्पर्द्धा व कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वे शिक्षित महिलाएँ, जो गृहस्थ जीवन में ही व्यस्त हैं, जिनका सामाजिक जीवन नगण्य ही माना जाए, उन्हें केवल अपने घर-संतान एवं पति से ही मतलब रहा है। वे महिलाएँ, जो पढ़ी-लिखी बहुत कम हैं, पर कुछ कर गुजरने के लिए तमन्ना सँजोए रहती हैं। इस वर्गीकरण के आधार पर महिलाओं का राष्ट्रीय संगठन तैयार किया जाए तो राष्ट्रीय स्तर पर नारी अपनी बहनों का कल्याण करने में योगदान दे सकती है, क्योंकि नारी जागरण संबंधी छुट-पुट आंदोलन बहुत कुछ हुए हैं और बहुत कुछ हो रहे हैं, किंतु उनका संबंध क्लबों, मंचों, संस्था की शोभा और ऊँचे घराने की नारियों का सम्मान तथा शौक पूरा करना आदि रहा है। फिर जब तक समग्र रूप में कोई आंदोलन नहीं उठता है, तब तक पूरे राष्ट्र में कुछ क्रांति आई है, इसका पता नहीं लग पाता है। इसलिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ही महिला जागरण अभियान चलाना चाहिए, इसी में नारी वर्ग का भला है।

व्यापक नारी जागरण के लिए शिक्षित नारियों को उपयोग में लिया जाना चाहिए। धनाढ़ी, पढ़ी-लिखी महिलाएँ समय की गुहार को पहचान कर अपने अहंकार को त्यागें और अपने सुख-सुविधा को कम करते हुए उस बचत की राशि का उपयोग महिलाओं के कल्याण में समर्पित करने हेतु आगे आएँ। नारी-संगठन एवं जागरण में बहुमुखी महत्वपूर्ण योगदान वे महिलाएँ दे सकती हैं, जो प्राध्यापक, डाक्टर या अन्य प्रशासकीय उच्च पदों पर आसीन हैं। जो महिलाएँ दुहरे उत्तरदायित्व से बोझिल हैं, उनके पास समय का अभाव है, लेकिन अपनी बहनों की उन्नति के लिए वे भी आगे आएँ। शिक्षित महिलाएँ अपने क्षेत्र में जहाँ भी हैं, वहीं महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करें। वे उन महिलाओं का सहयोग अवश्य

लें, जो कम पढ़ी-लिखी होते हुए भी अपने भीतर सेवा करने की इच्छा रखती हैं।

भारतीय आम नारियाँ यह भी नहीं जानतीं कि उनके कल्याण के लिए कौन-से कानून बने हैं? उन्हें कौन-से अधिकार मिले हैं तथा उनके लिए कौन-सी सुविधाएँ जुटाये हेतु क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं? ऐसी जानकारियाँ नारी समाज में पहुँचाई जानी चाहिए और उन्हें बदली हुई परिस्थितियों से अवगत कराना चाहिए। ऐसी संस्थाओं से संपर्क स्थापित करके, रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए, जो आज राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के लिए बहुत कुछ कर रही हैं या कर सकती हैं।

जाग्रत नारी को आगे बढ़कर नवयुग का संदेश सुनाने के लिए स्वयं चलकर गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले, दरवाजे-दरवाजे पर जाना होगा, तभी लंबे समय से सोई हुई सुषुप्त नारी में चेतना का संचार होगा। सबसे पहले वह शिक्षा को अपने हाथ में लें, घर-घर जाकर माता-पिता को लड़कियाँ पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। वे लड़के और लड़की के साथ शिक्षा में समान व्यवहार करें, इसके लिए उन्हें सहमत किया जाना चाहिए।

जहाँ कहीं स्वच्छता का अभाव है, शिक्षित नारियाँ एवं लड़कियाँ स्वयं घरों पर जाकर सफाई का क्रियात्मक महत्व समझाएँ। ठीक उसी भाँति जैसे कि गांधीजी ने हरिजन उद्धार के लिए हरिजन बस्ती में रहना स्वीकार किया था। इन कार्यक्रमों को अपने स्तर पर यदि शिक्षित नारी ने चला दिया तो उसे सरकार से भी अपेक्षा रखनी चाहिए कि वह महिला उत्थान के लिए नए-नए कानून बनाए, महिला उत्थान के लिए एक बड़ी राशि प्रतिवर्ष योजना में से खर्च करने हेतु प्रावधान रखे। इसके अलावा अनेक सामाजिक बुराइयाँ, रूढ़ियाँ, परंपराएँ आदि आम भारतीय नारी को संत्रस्त किए हुए हैं, उनके लिए संगठित रूप में उनके विरोध में प्रचार-प्रसार किया जाए। आवश्यकता पड़ने पर संघर्षात्मक

कदम भी शिक्षित नारी ही उठाए। यह कार्य साहित्य, कला और भाषण के माध्यम से ही किया जाए। घर-घर संपर्क, प्रोत्साहन-पुरस्कार आदि के द्वारा शिक्षित नारी वर्तमान स्थिति की काया पलट कर सकती है।

आमतौर से तीसरे प्रहर महिलाओं को कुछ फुरसत होती है। उस समय शिक्षित नारी संपर्क स्थापित करके उनके बीच गृहस्थोपयोगी चर्चा करें। उनके बाल-बच्चों, व्यवस्था, कुछ घरेलू उलझनों पर भी चर्चाएँ छेड़ सकती हैं। इधर-उधर के उदाहरणों द्वारा भी उनकी दैनिक-पारिवारिक गुत्थियों को सुलझाया जा सकता है। देखा गया है कि महिलाओं के स्वभाव में वस्त्र आदि दूसरी वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह करने की आदत होती है। इस संग्रहवृत्ति से वस्तुओं के दाम बढ़ते हैं और जमाखोरी पनपती है, अस्तु आवश्यकतानुसार वस्तुओं का क्रय बाजार से किया जाना चाहिए। इस ओर उन्हें प्रेरित करें। विचार-विमर्श पारस्परिक चर्चा के दौरान भी हो सकता है, आवश्यक नहीं कि इसके लिए गोष्ठी के आयोजन का ही इंतजाम खड़ा किया जाए। केवल शिक्षित नारी के हृदय में अपनी बहनों की पीड़ा हल्की करने का दर्द उत्पन्न हो जाने भर की देर है, समय निकालना, साधन जुटाना तो हर स्थिति में सरल हो जाता है।

आधुनिकता की लहर के चाहे जो प्रभाव या कुप्रभाव हुए हों, पर उसका एक अच्छा प्रभाव तो यह है कि स्त्रियों में भी अपनी स्थिति का बोध और योग्यता के प्रति आत्मविश्वास पैदा होने लगा है। यही कारण है कि साक्षरता के प्रसार की दृष्टि से शिक्षित महिलाओं की संख्या भी बढ़ी है। लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा भी संभ्रांत परिवारों में आवश्यक अनुभव की जाने लगी है और वे भी अपनी बच्चियों को लड़कों के समान शिक्षित बनाने की व्यवस्था करते हैं। उन सामान्य या मध्यमवर्गीय परिवारों में जहाँ कि लड़कों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है, वहाँ लड़कियों को भी थोड़ा-बहुत पढ़ाना-लिखाना जरूरी समझा जाता है।

निम्नलिखित कार्य जाग्रत महिलाओं को अपने क्षेत्र की स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रारंभ कर देने चाहिए—

### ( १ ) परिवार में आस्तिकता का वातावरण :

घर में आस्तिकता का, आध्यात्मिकता का और धार्मिकता का वातावरण बनाना चाहिए। नास्तिकता मनुष्य को उच्छृंखल और मर्यादाहीन बना देती है। कर्मफल, परलोक, ईश्वरीय नियंत्रण आदि को स्वीकार न करने के कारण यह मनोवृत्ति अवसर आने पर कुछ भी क्रूर कर्म करने के लिए तैयार हो सकती है। मनुष्य को पशु और पिशाच बनने से रोकने में सच्चे ईश्वर विश्वास से बढ़कर और कोई आत्मानुशासन नहीं हो सकता।

आध्यात्मिकता का अर्थ है—आत्मनिर्भरता, आत्मबोध, जीवन का महत्त्व, स्वरूप और लक्ष्य समझकर तदनुसार रीति-नीति निर्धारित करना। परावलंबी बहिर्मुखी व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरियों के कारण बाहरी जीवन में भी डरा-मरा, हारा-थका, दीन-हीन ही बना रहता है। आत्मगौरव, आत्मसंतोष जैसे दिव्य उपहार उसे कभी मिल ही नहीं पाते। आत्मबल संसार का सबसे बड़ा बल है और वह केवल अपनी गरिमा समझने वालों को ही मिलता है। बाहर से कुछ पाने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं, पर यदि भीतर से कुछ पाने के लिए उतना ही प्रयास किया जाए तो चमत्कारी प्रभाव पैदा हो सकता है। अपने अंदर की सोई हुई शक्तियाँ जाग्रत होकर साधारण मनुष्य को भी देवताओं जैसी विभूतियों से सजा सकती हैं। वे उपलब्धियाँ प्रगति का प्रत्येक द्वार खोल सकती हैं। जिनमें आत्मविश्वास है, जिन्होंने आत्मनिर्माण किया है, ऐसे व्यक्ति ही महामानवों की कतार में खड़े हो सकने योग्य बने हैं। इतिहास उन्हीं के गीत गाता है। जाग्रत नारी का कर्तव्य है कि वह व्यक्तिगत मान्यताओं में भी आस्तिकता और आध्यात्मिकता को गहराई तक उतारे और उन्हें परिवार के अन्य लोगों की आस्थाओं में भी बिठाने के लिए लगातार प्रयत्न करे।

हमारे घरों में पूजा-उपासना का वातावरण रहना चाहिए। अच्छा तो यह है कि परिवार के सभी लोग प्रातःकाल नित्यकार्य से निबटकर कुछ समय ईश्वर की गोद में बैठने की भावना के साथ उपासना के लिए शांतचित्त से एकांत में बैठें। गायत्री मंत्र का जाप और उगते हुए सूर्य की दिव्य किरणें अपने शरीर, मन और अंतःकरण में प्रविष्ट होने का ध्यान करें। समय का अभाव हो तो पंद्रह मिनट भी इसके लिए लगाते रहने से काम चलता रह सकता है। उपासना भी नित्य के दैनिक कार्यों में सम्मिलित रहनी चाहिए। यदि अधिक व्यस्तता या अरुचि का वातावरण हो तो भी इतना तो होना ही चाहिए कि पूजा स्थल पर गायत्री माता का, भगवान का चित्र स्थापित हो और काम-काज में लगने से पहले वहाँ जाकर, घर का प्रत्येक सदस्य दो मिनट मौन खड़ा होकर गायत्री मंत्र का पाँच बार जप मन ही मन कर लिया करे और प्रणाम करके इस छोटे से उपासना क्रम को पूरा कर लिया करे। इसमें बाधा केवल अरुचि और उपेक्षा के कारण ही हो सकती है, परंतु आस्तिकता के अनेक प्रकार के लाभों को समझा देने पर श्रद्धा के बीजांकुर उगाए जा सकते हैं। उसके लिए बहुत-सा साहित्य युग निर्माण योजना द्वारा तैयार किया जा चुका है।

सामूहिक भजन-कीर्तन-गायन-वादन की परंपरा भी घरों में चल पड़े तो उससे आस्तिकता की एक बहुत बड़ी आवश्यकता पूरी हो सकती है। भगवान के गुणगान से लेकर जीवन के भीतरी और बाहरी क्षेत्र में आदर्शवादी उमंगें उत्पन्न करने और प्रगति की दिशा में चरण बढ़ाने तक के विभिन्न विषय इन सहगानों में हो सकते हैं।

प्रातःकाल जल्दी सोकर उठने के लिए सारे सदस्य राजी होने चाहिए। स्नान, शौच आदि से निवृत्त होकर सामूहिक प्रार्थना को पति-पत्नी साथ-साथ या क्रम बनाकर घर का प्रत्येक सदस्य उस साधना स्थल में प्रवेश करे और परमात्मा की उपासना करे। आज का दिन एक परिपूर्ण जीवन है, यह मानकर परमात्मा से सचाई, ईमानदारी और नेक निष्ठा की ओर प्रेरित रखने के लिए बल की माँग की जाए।

भावना के अनुसार, धूप, दीप, अक्षत, रोली आदि से देव प्रतिमा का अभिषेक किया जाए। प्रातःकाल का नाश्ता सदस्य ईश्वर के प्रसाद रूप में ग्रहण करें तो वह और भी मंगलदायक हो सकता है।

प्रातःकालीन उपासना समाप्त करके जिसे जिस कार्य में जाना हो उसमें चले जाना चाहिए। स्त्रियाँ गृह-कार्यों में लग जाएँ। विद्यार्थी पाठशाला की ओर चले जाएँ और पुरुष वर्ग जो जिस कार्य में नियत हो उसमें चला जाए।

## ( २ ) संस्कार परंपरा का पुनर्जागरण :

परिवार प्रशिक्षण के लिए अपनी एक विशिष्ट परिपाटी है— संस्कार आयोजनों का पुनर्जीवन। इसके लिए सदस्याओं के जन्मदिन, विवाह दिन गर्भवतियों के पुंसवन तथा बच्चों के नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन और विद्यारंभ संस्कारों के उत्सवों की प्रक्रिया अपनाई गई है। यह चिर-प्राचीन भी है और बिल्कुल नवीन भी। चिर-प्राचीन इसलिए कि भारतीय संस्कृति में संस्कारों की पद्धति आवश्यक रूप से जुड़ी हुई है और इसे बहुत सूझ-बूझ के साथ प्रचलित किया गया है। चिर-नवीन इसलिए कि पारिवारिक कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों की जानकारी तथा उसे ठीक तरह निवाहने की व्यावहारिक रीति-नीति इस अवसर पर दिए जाने वाले प्रशिक्षण में बड़ी सुंदरता से जुड़ी हुई है। संस्कार आयोजनों को बिना किसी खर्च का, किंतु अत्यंत उत्साहवर्द्धक बनाया गया है। अपने-अपने घरों पर सभी शाखा सदस्याएँ इन आयोजनों को करती रह सकती हैं। भरे-पूरे परिवार में जल्दी-जल्दी वैसे अवसर आते रह सकते हैं और उस उमंग भरे वातावरण में आदर्शवादी परिवर्तनों की जड़ जमाने का अवसर बार-बार मिलता रह सकता है।

भारतीय संस्कृति में षोडश संस्कारों की प्राचीन परंपरा विद्यमान है। पंडितों ने उसे लूट-खसोट का जरिया बना लिया और शिक्षा-प्रेरणा का मूल उद्देश्य नष्ट करके मात्र पूजा-पत्री तक उसे सीमित

कर दिया, इसलिए जनविवेक ने उसकी अनुपयोगिता देखकर उसकी उपेक्षा आरंभ कर दी। अब वे संस्कार विधिवत् कहीं-कहीं ही होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि धर्म परंपराओं को पुनर्जीवित करने के उत्साहवर्द्धक अभियान के साथ-साथ परिवार निर्माण के लिए आवश्यक प्रशिक्षण करने और प्रगतिशील वातावरण बनाने की समन्वित प्रक्रिया को तत्काल आरंभ कर दिया जाए। इसका परिवारों में विरोध नहीं स्वागत ही होगा। इसमें दुहरा लाभ है। लोग अपनी परंपराओं के पीछे सन्निहित प्रगतिशीलता को समझेंगे और उनका सम्मान करेंगे, साथ ही परिवार प्रशिक्षण के लिए उत्साहवर्द्धक परिस्थितियाँ मिलती रहेंगी। उन छोटे आयोजन समारोहों में सहज ही उत्साहवर्द्धक वातावरण रहेगा। घर-पड़ोस के लोग पारस्परिक व्यवहार के कारण तथा कौतूहलवश उनमें इकट्ठे होंगे और उतने लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए महिला जागरण अभियान के कार्यकर्त्ताओं को अच्छा अवसर मिल जाएगा।

घर-घर जाकर उत्साहपूर्ण वातावरण में नवनिर्माण से संबंधित तथ्यों को समझाना पड़ेगा और उन्हें प्रचलन के स्तर तक पहुँचाना होगा। परिवार निर्माण के लिए प्रचलित ढर्म बदलने और संस्कार आयोजनों की धर्म परंपरा प्रचलित करके यह प्रयोजन बहुत ही सुविधा तथा सफलता के साथ उत्साहवर्द्धक वातावरण में संपन्न होता रह सकता है।

षोडश संस्कारों में दस प्रधान हैं। उनमें से पाँच ऐसे हैं, जिन्हें बिना पंडित, पुरोहितों की सहायता के महिलाएँ बहुत ही अच्छी तरह घरेलू उत्सवों के रूप में स्वयमेव संपन्न कर सकती हैं। (१) गर्भावस्था में तीसरे महीने होने वाले पुंसवन संस्कार को मनाते हुए परिवार के लोगों को यह समझाया जा सकता है कि नवजात शिशु को सुसंस्कारी बनाने के लिए गर्भिणी की शारीरिक, मानसिक स्थिति किस प्रकार संतोषजनक रखी जा सकती है और उसके लिए

घर के वातावरण में पारस्परिक व्यवहार में क्या हेर-फेर होना चाहिए।

(२) नामकरण संस्कार में बच्चे का नाम रखने के साथ-साथ उसके जीवन का उद्देश्य निर्धारित करने और उसके अनुरूप घर को एक संस्कृति पाठशाला के रूप में बदलने के लिए उस परिवार में किस प्रकार के परिवर्तन अभीष्ट हैं, यह सुझाया जा सकता है।

(३) अन्नप्राशन संस्कार यों होता तो बच्चे का है और प्रधानतया बच्चे के आहार-विहार के संबंध में बरती जाने योग्य सतर्कताओं की जानकारी दी जाती है, पर वस्तुतः सारे घर के आहार-विहार की चर्चा की गुंजायश उसमें रहती है। हम प्रायः अखाद्य खाते और अपेय पीते हैं, उससे पूरे परिवार का स्वास्थ्य नष्ट होता है। इस प्रसंग में अनीति उपार्जन से पेट भरने के क्या दुष्परिणाम होते हैं, इस तथ्य को भी समझाया जा सकता है।

(४) मुंडन संस्कार में बच्चे का मानसिक विकास करने की प्रेरणा मुख्य है। जन्मजात पशु संस्कारों के प्रतीक आरंभिक बाल काटकर उनके स्थान पर संस्कृति की प्रतीक शिखा स्थापित की जाती है। मस्तिष्क पर आदर्शवादी मान्यताओं का अधिकार सिद्ध करने वाली धर्म-ध्वजा फहराई जाती है। मुंडन के अवसर पर यह समझाया जा सकता है कि बच्चे का ही नहीं सारे परिवार का मानसिक विकास आवश्यक है और उस महान उपलब्धि के लिए किस प्रकार का चिंतन और कर्तव्य होना आवश्यक है।

(५) विद्यारंभ संस्कार में विद्या की आवश्यकता, उपयोगिता एवं सही दिशा के संबंध में घर के हर सदस्य को जानकारी मिलती है और यह बताया जाता है कि ज्ञान संपदा के अभिवर्द्धन में परिवार के हर सदस्य का पूरा उत्साह और अनवरत प्रयत्न बना रहना चाहिए। नीरोगता और समृद्धि की तरह विद्या संपदा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए और उसके लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए?

यों यह पाँचों संस्कार छोटे बालकों के मनाए जाते हैं, पर वस्तुतः बच्चे तो निमित्त हैं। वे तो बेचारे कुछ समझते तक नहीं।

आयोजन में वास्तविक शिक्षण पूरे परिवार का तथा उपस्थित संबंधी-पड़ोसियों का होता है। घर-घर प्रशिक्षण प्रक्रिया चल पड़े, इसके लिए इन आयोजनों का प्रचलन महिला जागरण की सभी सदस्याओं के यहाँ होना चाहिए। छोटे बच्चों का सिलसिला प्रायः चलता ही रहता है। किसी महीने किसी का नामकरण ज्ञो कुछ महीने बाद किसी का अन्नप्राशन, किसी का मुंडन इस प्रकार किसी-न-किसी बहाने बार-बार परिवार प्रशिक्षण के अवसर आते रहेंगे और उपयोगी प्रेरणाओं से उन लोगों को बार-बार प्रभावित किया जाता रहेगा। यह परिवार निर्माण की दृष्टि से एक बहुत ही उत्तम विधि-व्यवस्था है, जिसे प्रचलित करने के लिए महिला मंडलों को पूरा-पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

संस्कारों द्वारा परिवार निर्माण के क्रम में विवाह-दिवसोत्सव संस्कार का विशेष महत्त्व है। जिस दिन विवाह हुआ था, हर वर्ष उस दिन एक छोटा-सा उत्सव समारोह मनाया जाए। पति-पत्नी द्वारा छोटे-छोटे संकल्प लिए जाए तथा विवाह के कर्तव्य उत्तरदायित्वों को नए सिरे से पुनः समझा, समझाया जाए। हर वर्ष इस प्रकार का व्रत धारण प्रशिक्षण, संकल्प एवं धर्मानुष्ठान किया जाता रहे तो उससे दोनों को अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को पालने, निबाहने में निश्चय ही अधिक प्रेरणा मिलेगी। इस प्रकार वह सुनहरा दिन एक दिन के लिए हर साल नस-नाड़ियों में उल्लास भरने के लिए आ सकता है। उस दिन दोनों परस्पर विचार विनिमय करके अपनी-अपनी भूलों को सुधारने तथा एक-दूसरे के अधिक समीप आने के उपाय सुझाने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्ति निर्माण की दृष्टि से जन्मदिन मनाने का बहुत महत्त्व है। जिस सदस्या का जन्मदिन जब हो, उस दिन उसके घर छोटा उत्सव किया जाना चाहिए। मनुष्य जन्म कितना बहुमूल्य है? किस उद्देश्य के लिए मिला है और उस पुण्य-प्रयोजन की पूर्ति के लिए

चिंतन एवं कर्तृत्व की दिशा क्या होनी चाहिए ? इस तथ्य को अनेकों उदाहरण देकर बताया, सिखाया जा सकता है और जिसका जन्मदिन है, उसे प्रेरणा दी जा सकती है कि वह अपना सुरदुर्लभ जन्म सार्थक करने के लिए अपनी वर्तमान गतिविधियों में क्या हेर-फेर कर सकती है। यह व्यक्ति निर्माण की शिक्षा है, जिससे सभी उपस्थित लोग अपने-अपने लिए प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। यों महिलाएँ अपने-अपने बच्चों के जन्मदिन खुशी मनाने की दृष्टि से मनाती रहती हैं। अपना उद्देश्य उससे कहीं ऊँचा है। सदस्याओं का जन्मदिन मनाने की परंपरा इसलिए रखी गई है, ताकि उस दिन उन्हें आत्मचिंतन की नई प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर मिले।

ये सभी संस्कार-आयोजन ऐसे हैं, जिन्हें महिलाएँ ही मिल-जुलकर मना सकती हैं। हवन, कर्मकांड आदि के मंत्र एवं विधान सभी ऐसे सरल हैं, जिन्हें शिक्षित महिलाएँ कुछ ही दिन के प्रयत्न से बहुत अच्छी तरह सीख सकती हैं। आयोजनों में खर्च कुछ रूपए ही रखा गया है। अपनी पद्धति से कम खर्च में हवन आदि कृत्य हो जाते हैं। जल-पान, चाय-पान आदि से स्वागत की खर्चाली प्रथा इन आयोजनों में सर्वथा निषिद्ध ठहरा दी गई है, ताकि गरीब से गरीब स्थिति के लोग भी उन्हें पूरे उत्साह और पूरे सम्मान के साथ संपन्न कर सकें।

### ( ३ ) सामूहिक पर्व-त्योहार :

अपने गली-मुहल्ले या गाँव-नगर के सभी नर-नारियों को इकट्ठा करके सामूहिक रूप से पर्व-त्योहार मनाने के कार्यक्रम बनाने चाहिए। दीपावली, वसंतपंचमी, शिवरात्रि, होली, रामनवमी, गायत्री जयंती, गुरु पूर्णिमा, रक्षाबंधन, विजयादशमी आदि त्योहारों को सार्वजनिक आयोजनों के रूप में मनाया जाना चाहिए और इन पर्वों के पीछे व्यक्ति-निर्माण के जो सूत्र भरे पड़े हैं, उनसे जन-साधारण को अवगत कराना चाहिए। समाज के

नव-निर्माण में इन आयोजनों का क्रांतिकारी प्रभाव देखा जा सकता है। युग निर्माण मिशन ने इन्हें मनाने के जो विधान बनाए हैं तथा प्रतिपादन के जो तथ्य प्रस्तुत किए हैं, वे अभूतपूर्व हैं। उनमें आज की समस्याओं के प्रखर समाधानों को कूट-कूट कर भर दिया गया है।

कार्तिकी अमावस्या की दीपावली होती है और वह अर्थ-संतुलन के साथ जुड़े हुए अनेकानेक समाधान लेकर आती है। उस पर्व को मनाते हुए देश की अर्थव्यवस्था की विकृति के कारण और उन्हें संतुलित करने के उपाय सुझाए जा सकते हैं। इसी प्रकार माघ सुदी पंचमी को वसंतपंचमी शिक्षा की, फाल्गुन सुदी पूर्णिमा को होती स्वच्छता एवं श्रम सहयोग की, चैत्र सुदी नवमी रामनवमी मर्यादा पालन की, ज्येष्ठ सुदी दशमी गायत्री जयंती आत्मिक पवित्रता की, आषाढ़ सुदी पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा-अनुशासन की, श्रावण सुदी पूर्णिमा श्रावणी-उपनयन परिवर्तन के साथ द्विजत्व की, पशु जीवन त्याग कर मनुष्य जीवन में प्रवेश करने की जिम्मेदारी निबाहने की, भाद्रपद वदी अष्टमी-जन्माष्टमी कृष्ण के कर्मयोग की, आश्विन सुदी दशमी विजयदशमी शक्ति संचय की प्रेरणा लेकर आती है। इन पर्वों को मनाने के समय उपर्युक्त समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक संगठन, संशोधन एवं विकास की अनेकानेक गुत्थियों के हल सुझाए जा सकते हैं। समाज निर्माण की शिक्षा इस माध्यम से उत्साहवर्द्धक वातावरण में ही अच्छी तरह हो सकती है। धर्म परंपराओं के निर्वाह के साथ-साथ लोक-शक्ति को जाग्रत, परिष्कृत, संगठित एवं विकसित करने का यह तरीका इतना उत्तम है कि भारत की वर्तमान परिस्थितियों में लोक-शिक्षण का और कोई उपाय सोचा ही नहीं जा सकता है।

( ४ ) पारिवारिक गोष्ठी एवं बच्चों को कहानियाँ सुनाना :

परिवार का भावनात्मक निर्माण करने के लिए साप्ताहिक परिवार गोष्ठियों में घर की समस्याओं पर परस्पर विचार-विनिमय

करने, बजट बनाने तथा भावी रीति-नीति निश्चित करने का सिलसिला चलाया जा सकता है। समस्याओं का समाधान दूँढ़ा जा सकता है और प्रगति के नए चरणों का निर्धारण किया जा सकता है। हर नारी को इसके लिए सुनिश्चित रूपरेखा बनानी होगी और अपने निज के व्यक्तित्व को विकसित करने के साथ समूचे परिवार का नव-निर्माण करने के लिए साहस समेटना पड़ेगा।

सामान्यतया बच्चों को प्रेरणाप्रद कहानियाँ सुनाने की छोटी-सी बात को लेकर आगे बढ़ना है, सभी सदस्याएँ बच्चों के लिए ज्ञानवद्धक एवं दिशा देने वाली कहानियाँ सीखेंगी और उन्हें किस आयु के बच्चों के लिए किस प्रकार कहना चाहिए, यह कला अपनाएँगी। हर घर में रात्रि को कहानियाँ कहने का प्रचलन होना चाहिए। “दादी-नानी की कहानी” की उक्ति प्रसिद्ध है। वृद्धाएँ तथा जिनके पास अवकाश रहता है, वे इस कार्य को बड़ी आसानी से कर सकती हैं। उनको उत्साह न होने पर कामकाजी महिलाएँ भी किसी प्रकार उसके लिए समय निकाल सकती हैं। यों आज ऐसी कहानियों की भारी कमी है, जो मात्र मनोरंजन न होकर बच्चों को दिशा एवं प्रेरणा दे सकें, फिर भी उन्हें दूँढ़ा और उपलब्ध कराया जा सकता है।

बच्चों में कहानियाँ सुनने का सहज भाव होता है। जब वह सिलसिला चल पड़े तो घर के अन्य लोग भी खिसक कर वहीं आ इकट्ठे होते हैं। कथा सुनने में आनंद तो सभी को आता ही है। इस प्रकार कहानियाँ कहने की प्रक्रिया यदि सुनियोजित और दूरदर्शितापूर्ण आधार लेकर चलाई जाए तो इस छोटे दिखने वाले कार्य से भी अगणित सत्परिणाम प्रस्तुत हो सकते हैं। व्यक्तियों के निर्माण में कथा प्रचलन की अनुपम भूमिका हो सकती है।

आवश्यक नहीं कि कथा में धर्मग्रंथ ही पढ़े-सुने जाएँ और उनका समय रात्रि का हो। सुविधा और रुचि के अनुसार इसमें

परिवर्तन किए जा सकते हैं। रात्रि की अपेक्षा तीसरे प्रहर भी इसका समय हो सकता है। व्यक्ति, परिवार और समाज की समस्याओं के स्वरूप समझाने वाली और उनके समाधान बताने वाली पुस्तकें भी एक प्रकार से धर्मग्रंथ ही हैं। संस्कृत में बात कही गई हो या देशी भाषा में इसमें कुछ अंतर नहीं आता।

प्राचीनकाल के ऋषियों ने अपने समय की समस्याओं पर उसी समय की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए प्रकाश डाला था। आज की स्थिति उस समय से भिन्न है। आज वे समस्याएँ नहीं जो प्राचीनकाल में थीं। अब नई समस्याएँ सामने हैं और उनके समाधान आज के हिसाब से ही ढूँढ़ने होंगे। यह काम युगद्रष्टाओं और कालपुरुषों का है। विवेकानंद, दयानंद, गांधी, विनोबा आदि को हम युगद्रष्टाओं में गिन सकते हैं और उनके द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार अपनी विचारधारा परिष्कृत करने का लाभ उठा सकते हैं। कथा का उद्देश्य युगद्रष्टाओं के साहित्य से भली प्रकार पूरा हो सकता है।

#### ( ५ ) तुलसी रोपण :

तुलसी के पौधे घर-घर लगाए जाने का अभियान भी चलाना चाहिए। उसके पत्ते, फूल, बीज आदि सभी उपयोगी औषधि का काम करते हैं। जुकाम, बुखार, सर्दी, खाँसी आदि कितने ही रोगों में उनका प्रयोग हो सकता है। तुलसी के स्पर्श से वायु शुद्ध होती और मच्छर-मक्खी भागते हैं। सबसे बड़ी बात है—घर के वातावरण में धार्मिकता का समावेश। फल, शाक आदि न लग सकें तो भी वृक्षारोपण के प्रतीक चिह्न के रूप में तुलसी का पौधा हर घर में सम्मानपूर्वक लगाया जाना चाहिए। रचनात्मक अभियान का यह भी एक अच्छा शुभारंभ माना जाएगा।

#### ( ६ ) शिशु पालन का प्रशिक्षण :

सुगृहिणी को कुशल मालियों की तरह अपने घर-परिवार के लिए न केवल सुकोमल अनुदान देने पड़ते हैं, परंतु दूरदर्शी प्रशासक

की तरह नियंत्रण एवं प्रतिरोध के कड़े कदम भी उठाने पड़ते हैं। बुद्धिमान माताएँ अपने बालकों पर केवल प्यार ही नहीं करतीं, वे एक आँख से दुलार, दूसरी से वर्जन का हथियार भी थामे रहती हैं। इसी संतुलन के अभाव में माता की एकपक्षीय प्रवृत्ति बच्चों के व्यक्तित्व का नाश कर देगी। अविवेकपूर्ण दुलार से बच्चे बिगड़ते हैं, इसे हर कोई जानता है। नारी को दोनों ही शास्त्र ढाल-तलवार की तरह सुरक्षात्मक और आक्रमणात्मक दोनों ही प्रयोजन पूरे करने हैं।

### ( ७ ) लड़का-लड़की एक समान :

घरों में लड़के और लड़कियों के बीच बरता जाने वाला भेद-भाव तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए। लिंग-भेद के कारण किसी को न तो सम्मान मिले, न तिरस्कार। न तो लड़कियों को छोटी नजर से देखें, न लड़कियाँ ही अपने को हीन अनुभव करें। ऐसा व्यवहार स्वयं भी करना चाहिए और दूसरे को भी वैसा ही करने के लिए कहना चाहिए। लड़के कमाई खिलाते और वंश चलाते हैं, लड़कियाँ पराए घर का कूड़ा और कर्जे की डिगरी होती हैं, ऐसी बुद्धि रखकर बच्चों में भेदभाव करना यह बताता है कि ये लोग अभिभावक कहलाने तक के अधिकारी नहीं, सहज वात्सल्य का इनमें उदय नहीं हुआ है। हमें इस प्रकार के भेदभाव को अपने मनों से पूरी तरह निकाल ही फेंकना चाहिए। पुत्र-जन्म की खुशी और कन्या-जन्म पर रंज मनाया जाना मनुष्यता की शान पर बट्टा लगाता है।

### ( ८ ) शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन :

जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण करने का, युग परिवर्तन एवं युग निर्माण का विश्वव्यापी उत्तरदायित्व नारी के कंधे पर ही महाकाल ने सौंपने का निश्चय किया है। इसमें उसकी ईश्वरप्रदत्त विशिष्टता ही मुख्य कारण है। नारी में वे सभी गुण हैं जिनसे वह अपनी संतान, परिवार, समाज और समूची मानव जाति का निर्माण कर सकती है।

यह महान उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए नारी को शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन इन तीनों ही मोरचों पर आगे बढ़ना है। उसे व्यक्तिगत जीवन में घुसे हुए आलस्य और अवसाद को छोड़ना होगा और प्रगति के लिए अवकाश एवं साधन प्राप्त करने होंगे।

**शिक्षा :**—शिक्षा और स्वावलंबन की दिशा में नई उमंगें उठनी चाहिए। अध्ययन का शौक उत्पन्न किया जाए। बिना पढ़ी प्रौढ़ महिलाएँ पढ़ना आरंभ करें, पढ़ी आगे का अध्ययन जारी रखें। आवश्यक नहीं कि यह पढ़ाई स्कूली परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से ही हो। उपयोगी ज्ञान बढ़ाना ही अपनी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। महिलाओं की प्रौढ़ पाठशालाओं का संगठित प्रयास गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले में होना चाहिए। लड़कियों को स्कूल भेजने में आनाकानी या उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। विवाह की जल्दी या शादी में खर्च की बात सोचकर लड़कियों की शिक्षा में कंजूसी बरती जाती है, इस उपेक्षा वृत्ति का अंत होने से ही नारी का स्तर ऊँचा उठेगा और भविष्य उज्ज्वल होगा।

**स्वास्थ्य :**—सामान्य धातृ विद्या सिखाने के लिए हर जगह प्रबंध हो। प्रसूतिशालाएँ चलें। शिक्षित दाइयाँ प्रसव में सहायता देने के लिए उपलब्ध रहें। पिछड़े क्षेत्र में इस जानकारी के अभाव में हर साल लाखों मृत्यु होती हैं और अगणित महिलाएँ इसी कुचक्र में जीवनभर के लिए भयंकर यौन रोगों से ग्रसित हो जाती हैं। इनका जीवन बचाने के लिए हर जगह प्रबंध हो। प्रजनन सीमित करने की आवश्यक शिक्षा, सफाई, रोगी की परिचर्या, पौष्टिक भोजन की उपयोगिता, विभिन्न रोगों में घरेलू उपचार, प्राथमिक चिकित्सा, नशे से स्वास्थ्य को हानि आदि विषयों का ज्ञान सभी महिलाओं को दिया जाए।

**स्वावलंबन :**—स्वावलंबन की दृष्टि से घर-घर में गृह-उद्योगों का प्रचलन आवश्यक है। कपड़ों की धुलाई, सिलाई, मरम्मत

इस दिशा में सर्वप्रथम हैं। इस कला का अभ्यस्त हर नारी को होना चाहिए। इससे कौशल भी बढ़ता है और पैसा भी बचता है। टूट-फूट की मरम्मत और शाक वाटिका जैसे दो उद्योग भी ऐसे हैं, जो प्रत्येक गृहणी को जानने और चलाने चाहिए। इनके अलावा आस-पास के क्षेत्र में खपत होने योग्य कुछ वस्तुएँ, अपनी सुविधा देखते हुए बनाने का प्रयास किया जा सकता है। यों यह कार्य सहकारी समितियों से अधिक अच्छी तरह हो सकता है। ये कच्चा माल उचित मूल्य पर दें और उत्पादन खरीद कर बाजार में खपाएँ। ऐसे उत्पादन की शिक्षा देने का प्रबंध भी हो सके तो घर-घर में गृह उद्योग चल सकते हैं और बेकारी तथा गरीबी को दूर करने में भारी सहायता मिल सकती है। संगठित रूप में न बन पड़े तो भी व्यक्तिगत प्रयत्नों से ही इस दिशा में कुछ-न-कुछ करते रहने की आवश्यकता है। उत्पादन और निर्माण की दिशा में हमारे धीमे या तेज कदम उठने ही चाहिए। नारी स्वावलंबन की दिशा में इन प्रयासों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है।

### ( ९ ) परदा प्रथा—एक कुप्रथा :

परदा प्रथा का अंत होना ही चाहिए। यह कार्य स्त्रियाँ स्वतः करें। सास अपनी पुत्रवधू को बेटी कहकर संबोधित करें और बताएँ कि अन्य बच्चों की तरह वह भी इस परिवार की सदस्य है। नर, नारी पर परदे के लिए न तो दबाव डाले और न प्रोत्साहित करे। घर की महिलाएँ आपस में मिलजुलकर इस कुरीति का अंत करें। विचारशील पुरुषों को भी इसमें कोई बड़ी आपत्ति नहीं होगी और इस पिछड़ेपन की निशानी का सहज ही अंत हो जाएगा।

### ( १० ) जेवर धाटे का सौदा :

जेवरों की अनुपयोगिता स्पष्ट है। उनमें व्यर्थ ही पैसा रुकता है। धातुओं में मिलावट, टाँका, बट्टा, मीना तथा गढ़ाई, बनाई, टूट-फूट के कारण उनमें लगे धन की कीमत आधी भी नहीं उठती। उतना पैसा बैंक में रखा जाए तो ब्याज के कारण

बढ़ता चला जाएगा, जबकि जेवरों में वह निरंतर घिसता और घटता ही है। चोरी, हत्या, ईर्ष्या, अहंकार, उद्धत प्रदर्शन, प्रतिस्पद्ध जैसी कितनी ही ऐसी हानियाँ हैं जो जेवरों के कारण आएदिन होती रहती हैं। सोना, चाँदी जैसी बहुमूल्य धातुएँ राष्ट्रीय कोष में संग्रहीत न रहकर जब घरों में बिखर जाती हैं तो उसका प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। जिन अंगों पर जेवर लदे रहते हैं, उनकी त्वचा कड़ी पड़ जाती है, पसीना रुकता है और कुरुपता तथा रुणता उत्पन्न होती है। नाक और कान में सूराख करके जेवर पहनना तो किसी असभ्य काल में प्रचलित हुई रूढ़ि के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जेवरों का प्रचलन घटाने और हटाने के लिए हमारे मनों में उत्साह उत्पन्न होना चाहिए।

### ( ११ ) भौंड़े फैशन से बचें :

फैशन के नाम पर खर्चाला भौंड़ापन आजकल बढ़ता चला जा रहा है। अवांछनीय सज-धज से शृंगारिक अश्लीलता बढ़ती है और चरित्रों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भड़कीली सज-धज मनुष्य के ओछेपन और बचकानेपन की निशानी है, इससे ऊपरी आकर्षण भले ही बढ़ जाए, सम्मान नहीं बढ़ता। जहाँ भी उद्धत सज-धज पनप रही है, वहाँ उसको निरुत्साहित ही किया जाना चाहिए।

### ( १२ ) अनीति एवं कुरीति उन्मूलन :

अनीति उन्मूलन के मोरचे पर भी नारी को सक्रिय होना पड़ेगा। कुरीतियों, मूढ़ मान्यताओं और अंधविश्वासों ने नारी जाति को असीम क्षति पहुँचाई है। उन्हें एक-एक करके उखाड़ने की व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। छोटी उम्र में बच्चों का विवाह कर देना बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। अठारह से कम आयु की लड़कियों एवं इकीस से कम उम्र के लड़कों का विवाह करके उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को चौपट कर देने वाली भूल अब बिल्कुल बंद हो जानी चाहिए।

महिलाओं में इतना साहस होना चाहिए कि पुरुषों को समझा सकें कि मिलावट, रिश्वत, कमतौल, कम नाप, असली बताकर नकली देने, अनुचित मुनाफा लेने, तस्करी, चोरबाजारी एवं अनीति अपनाने से जो धन मिलता है, वह दुर्व्यसनों में, ठाठ-बाट, शान-शौकत जैसे अपव्ययों में चला जाता है। चोरी, राजदंड, दवा-दारू, मुकदमा जैसी विपत्तियों में प्रायः ऐसी ही कमाई की बरबादी होती है। ईमानदारी से कमाया पैसा भले ही थोड़ा हो, चाहे उसके सहारे कठिनाई से गुजारा होता हो तो भी यह निश्चित है कि उतने से भी परिवार फलते-फूलते और सुखी रहते हैं।

मृतक-भोज, भूत-पलीत, टोना-टोटका, ज्योतिष, मुहूर्त जैसे भ्रम-जंजाल में समय, धन और संतुलन गँवाने से लाभ रक्ती भर भी नहीं, हानि अपार है। देवी-देवताओं के नाम पर पशुबलि और नरबलि के जो कुकर्म देखने को मिलते हैं, उन्हें लज्जाजनक मूढ़-मान्यता के अतिरिक्त और कोई नाम नहीं दिया जा सकता।

दहेज का लेन-देन मांस की खरीद-फरोख्त से भी अधिक घिनौना है। इस कुप्रथा के कारण अपने समाज में गरीबी और बेईमानी का कुचक्र चल रहा है, उससे चरित्रनिष्ठा की नींव डगमगाने लगी है। समय आ गया कि इस प्रथा का अंत कर दिया जाए और नितांत सादगी के साथ कम खर्च की शादियाँ चल पड़ें।

महिला गोष्ठियों में इस प्रकार के विचार रखें जाएँ कि दहेज-प्रथा, खर्चाले विवाह, मृतक-भोज जैसी अन्योपयोगी परंपराओं से चिपटा रहना इस बात का प्रमाण है कि समाज में नवीनता का अभाव है, यदि समाज में खुशहाली लाना चाहते हैं, परिवारों से कलह समाप्त करना चाहते हैं तो इन कुरीतियों का विरोध करना चाहिए। नारी पुनरुत्थान के लिए ऐसी मान्यताएँ और माहौल बनाना आवश्यक है जिसमें जनता इन कुरीतियों से परिचित हो जाए। सम्मिलित रूप से महिलाओं को ही इस कार्य में जुट जाना चाहिए।

## ( १३ ) व्यसन मुक्ति के लिए परिवार एवं समाज में प्रयास :

विचारशील नारी का कर्तव्य है कि नशे के दुष्परिणामों को समझें और जिन्हें उनकी लत पड़ गई है, उनसे छुड़ाने या घटाने का अनुरोध बराबर करती रहें। जिन्हें इनकी लत नहीं पड़ी है, उन्हें पूर्व चेतावनी देकर बचाने का प्रयत्न करें। समर्थन तो कभी नहीं करना चाहिए। कोई भयंकर विग्रह हो तो उसे टालने के लिए कुछ समय प्रतीक्षा करने की नीति अपनाई जा सकती है, पर उनके उस कार्य में सहयोग करने लगने पर सहमत नहीं होना चाहिए। कड़क बने रहने पर ही बुरी आदतों के छूटने की आशा की जा सकती है। नशे के असर से प्रिय परिजनों के प्राण बच सकें, इसके लिए विवेकवान महिलाएँ सदा प्रयत्नशील रहती हैं। नशेबाजों की संतानें तामसिक स्वभाव और दुर्गुणों से ग्रसित होती हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए परिवार के प्रत्येक शुभचिंतक को इस असुर को घर से बहिष्कृत करने में तत्परता दिखानी चाहिए। महिला संगठनों ने अनेक स्थानों पर शराब के अद्दे बंद कराए हैं।

## ( १४ ) अश्लील गीत, संगीत, साहित्य और चित्रों का घरों से बहिष्कार :

सार्वजनिक सभा-सम्मेलन करने चाहिए, जिनमें अश्लील चित्रों और साहित्य के प्रति घृणा उत्पन्न की जाए। जनता में धार्मिक भावनाओं की उत्तरोत्तर वृद्धि के साधनों को अपनाना, धार्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय की ओर रुचि बढ़ाना, धर्म का वास्तविक रूप जनता के सामने रखना, अधर्म के मार्ग पर चलने की हानियाँ बतानी चाहिए। इससे नारी जाति के प्रति सम्मान के भाव जाग्रत होते हैं, उसे केवल भोग की सामग्री न समझ, पूज्य भाव से देखने लगते हैं।

जितना प्रचार कामवासना की वृद्धि का सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं व साहित्य द्वारा किया जाता है, उससे कहीं अधिक व्यापक और

शक्तिशाली प्रचार उसके विरुद्ध करने से ही समाज को इस रोग से मुक्त किया जा सकता है। किसी भी आंदोलन को सफल बनाने के लिए जनसंपर्क से अपने संगठन में वृद्धि होती है। प्रचार द्वारा विचार-क्रांति की जाती है, क्योंकि विचारों में वह महान शक्ति है, जो मनुष्य की काया पलट देते हैं। जनता में उत्तम विचारों का प्रचार-प्रसार ही श्रेष्ठ पुरुषों का कर्तव्य है। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित यज्ञ-सम्मेलनों में या लोगों से व्यक्तिगत रूप से नर-नारी दोनों को ही मिलकर निम्न संकल्प कराना चाहिए।

“मैं मानता हूँ/मानती हूँ कि आजकल के अश्लील चित्र, अश्लील साहित्य, अश्लील गीत-संगीत समाज में दूषित भावनाओं को जाग्रत करते हैं, सन्मार्ग से हटाकर कुमार्ग की ओर ले जाते हैं, इसीलिए मैं अपने घर अश्लील चित्र, साहित्य, गीत-संगीत को कोई स्थान नहीं दूँगा/दूँगी और अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों को भी इनसे दूर रहने की प्रेरणा दूँगा/दूँगी।”

महिला संगठनों को बाजार में लगाने वाले गंदे चित्रों को काला पोतने एवं अश्लील साहित्य की होली जलाने के कार्य सामूहिक रूप से करने चाहिए। प्रेरणाप्रद गीत-संगीत की प्रतियोगिता, प्रेरणाप्रद चित्रों, सद्वाक्यों के स्टीकर घरों में लगाने एवं धार्मिक सद्विचारों की पत्रिकाएँ परिवार में पढ़ने की परंपरा चलानी चाहिए।

नारी को भोग्या के रूप में प्रस्तुत करके उसे अपमानित, पतित बनाने वाले कामुक प्रचार को रोका जाए। साहित्य, चित्र, फिल्म, गीत आदि माध्यमों से नारी को वासना की पुतली के रूप में प्रस्तुत करने में शालीनता की समस्त मर्यादाएँ तोड़ी जा रही हैं। इन प्रवृत्तियों का घोर विरोध खड़ा किया जाए। नारी को फूहड़, उत्तेजक एवं श्रृंगार सजधज में सन्निहित आत्महीनता से विरत किया जाए। नर की तरह नारी को भी मात्र मनुष्य ही रहने देने का वातावरण बनाया जाए। उसे वासना की पुतली के रूप में प्रस्तुत करने वाले समस्त प्रयासों को प्रबल विरोध खड़ा करके निरस्त किया जाए। अश्लीलता

तथा दूसरे प्रकार की नारी को दुःखद परिस्थितियों में धकेलने वाली दहेज, बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि कुरीतियों को रोकने के लिए स्वयंसेवक सेना खड़ी की जाए जो आवश्यकतानुसार विरोध के सभी उचित उपायों का सहारा लेकर अनीति को रोक सकें।

### ( १५ ) सादगी से विवाह एवं दहेज उन्मूलन :

विवाहों का क्रम समस्त संसार में चलता है। यह एक सामान्य स्वाभाविक सृष्टि-प्रक्रिया है। इसमें न कोई अनोखापन है न आश्चर्य। सर्वत्र आएदिन विवाह होते रहते हैं। ऐसी हँसी-खुशी के अवसर पर कुछ मंगल-गीत, जलपान, उत्सव, उपहार जैसी छोटी प्रक्रिया की जाए तो उचित भी है। संसार भर में प्रायः ऐसा ही कुछ होता है। मित्र एवं संबंधियों के साथ छोटे उत्सव होते हैं और चार घंटे में समाप्त हो जाते हैं।

अपने देश में इस साधारण-सी बात को तिल का ताड़ बना दिया जाता है। विवाहोत्सव की विशालता, खर्चालापन और कृत्रिमता भरी धूमधाम को ऐसा रूप दिया जाता है, मानो आकाश से सूरज-चाँद उतरकर जमीन पर आ रहे हैं। यह धूमधाम कौन कितनी बढ़ा-चढ़ाकर करता है, इस बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया जाता है और उन दिनों लोग उन्मत्त जैसी मनःस्थिति में जा पहुँचते हैं। इस अनावश्यक धूमधाम से किसका क्या प्रयोजन सिद्ध होगा, कोई सोचता तक नहीं। पैसा इससे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए चाहिए। घर-परिवार में शिक्षा, तंदुरुस्ती, चिकित्सा, व्यवसाय आदि कितने ही कामों के लिए पैसा चाहिए। उस सबको रोककर इस धूमधाम में ऐसी बुरी तरह खर्च किया जाता है, मानो वह मुफ्त का, हराम का, कहीं सड़क-चौराहे पर गिरा पड़ा मिल गया हो। बाराती इस सज-धज से फिरते हैं, मानो उन्हें किसी नाटक में इंद्र-कुबेर का अभिनय करना हो। गाजे-बाजे, धूम-धड़ाका देखकर लगता है, ये लोग कोई बड़ा युद्ध जीतकर आए हों।

जागरूक महिलाओं को महिला कल्याण की संस्थाओं के सहयोग से इस संदर्भ में अपने कदम आगे बढ़ाने चाहिए और समाज का पथ-प्रदर्शन करने का उत्तरदायित्व वहन करना चाहिए। यह प्रयास प्रस्ताव पास करने, लैक्चर देने या एक-दूसरे से चर्चा करते रहने से पूरा नहीं हो सकता। इसका सीधा-सा तरीका यह है कि हम में से जिनके लड़के विवाह योग्य हैं, वे इस बात की प्रतिज्ञा कर लें कि वे बिना दहेज और बिना धूमधाम का सादगीसंपन्न विवाह करेंगे। आगे लड़कों को और उनके अभिभावकों को आना चाहिए। जोर और दबाव उन्हीं पर दिया जाना है। खर्चाली शादी करने वाले और दहेज लेने वाले को ही नीति और न्याय अपनाने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। कठिनाई तब पड़ती है, जब हमीं में से लोग दुहरे मुखौटे बाँध लेते हैं। कन्या विवाह योग्य होती है तो आदर्शवाद का समर्थन करते हैं और जब लड़का विवाह योग्य होता है तो गिरगिट की तरह तुरंत रंग बदल लेते हैं।

आज जिस ढंग से जिस आडंबर, अहंकार और तामसी वातावरण में विवाह-शादियाँ होती हैं, उन्हें देखकर किसी भी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि यह दो आत्माओं के समर्पण के लिए आयोजित सर्वमेध-यज्ञ का धर्मानुष्ठान है। उन दिनों तमोगुण की ही घटाएँ छाई रहती हैं। अश्लील गीत, गंदे, ओछे मरखौल, पान, बीड़ी, भाँग, शराब की धूम देखकर उसकी संगति यज्ञ से कैसे बिठाई जाए?

यह हलका-फुलका धार्मिक कृत्य मानव जीवन की एक साधारण-सी आवश्यकता है। जिस प्रकार मुंडन, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, जनेऊ, वानप्रस्थ आदि अन्य संस्कार होते हैं, वैसा ही विवाह भी एक साधारण-सा धर्मानुष्ठान है। उसमें संस्कार का कुछ बड़ा आयोजन रह सकता है, हर्ष-उल्लास का छोटा-मोटा आयोजन भी रह सकता है, पर वह इतना खर्चाला और उलझन भरा कदापि न होना चाहिए कि आर्थिक दृष्टि से दोनों पक्षों का कचूमर ही निकल जाए।

## ( १६ ) बाल संस्कारशालाएँ :

शिक्षा और स्वास्थ्य संवर्द्धन की संयुक्त प्रक्रिया पहली कक्षा के बालकों से लेकर आठवीं कक्षा तक के बालकों से आरंभ की जाए। उनके लिए ट्यूटोरियल कक्षाएँ चलाई जाए। सरकारी स्कूलों की पढ़ाई भर से आजकल काम नहीं चलता। ट्यूशन की मोटी राशि देकर शिक्षकों को घर बुलाने की मनःस्थिति एवं परिस्थिति हर अभिभावक की नहीं होती। ऐसी दशा में बालकों को अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हो सकना कठिन पड़ता है। अपने मन से अकेले पढ़ते रहें, ऐसा उनका स्वभाव नहीं होता। फेल हो जाने या डिवीजन बिगड़ जाने पर उनका मनोबल टूट जाता है और कितने ही सदा के लिए पढ़ना छोड़ देते हैं। इन कठिनाइयों का समाधान यह है कि स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा बाल संस्कारशालाएँ उनके स्कूली समय को छोड़कर चलाई जाएँ, फीस कुछ भी न ली जाए। इस पाठशाला में अनेक छात्र आग्रहपूर्वक सम्मिलित होंगे, आम व्यक्ति भी खुशी-खुशी उन्हें भेजेंगे। इस दृष्टि से भी कि स्कूली समय से अवकाश मिलने पर बच्चे दंगा मचाते, आवारागदी में घूमते और कुसंग में पड़कर भविष्य बिगाड़ते हैं। इस झंझट से बचने के लिए भी हित इसी में है कि बच्चे इन बाल-संस्कार के निमित्त बनाई गई प्रज्ञा पाठशालाओं में पढ़ने जाया करें। इसमें अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण होने और संस्कार प्राप्त करने का दुहरा लाभ है।

जिस प्रकार अन्य कामों के लिए विचारशील उदारचेताओं से समय माँगा जाता है, उसी प्रकार पाठशालाओं में पढ़ाने के लिए बिना मूल्य पुरुषार्थियों से समय देते रहने के लिए आग्रह किया जा सकता है, जिनका ऐसे कार्यों में उत्साह है। आवश्यक नहीं कि सेवानिवृत्त ही यह उत्साह दिखाएँ। व्यवसाय, नौकरी आदि रहते हुए भी इस हेतु समय दे सकने वाले और पाठशाला के समय पर पढ़ाने के लिए पहुँचते रहने वाले लोग तलाश करने पर अवश्य ही मिल सकते हैं।

प्रबुद्ध नारियों आगे आएँ / ३४

स्थान की दृष्टि से संस्थानों का हॉल, बरामदा या आँगन इस प्रयोजन के लिए सर्वोत्तम हैं। इससे उपयोगी सेवा-साधन में संलग्न होने से संस्थानों की गरिमा बढ़ती है और जन-जन की सहानुभूति अर्जित होती है। बच्चों से प्रयास आरंभ करना इसलिए सरल है कि उनकी व्यवस्था बनाने में कहीं भी कठिनाई नहीं हो सकती।

### ( १७ ) प्रौढ़ पाठशालाएँ :

प्रौढ़-शिक्षा का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। अविवाहित या छोटी आयु की लड़कियाँ स्कूलों का लाभ उठा सकती हैं, पर जिनकी उम्र बड़ी हो चुकी है, जो विवाहित हैं, जिन्हें घर-गृहस्थी सँभालनी है, उनको भी अशिक्षित नहीं रहने दिया जा सकता। आज जिनको सामाजिक भूमिकाएँ निभानी पड़ रही हैं, जिनका प्रभाव है, जो समर्थ हैं, आज की समस्याएँ उन्हीं से उत्पन्न होती हैं और उन्हीं के द्वारा सुलझ सकती हैं। छोटी-कन्याएँ बड़ी होकर पंद्रह-बीस साल बाद प्रभावशाली बनेंगी, तब तक वर्तमान पीढ़ी की अशिक्षित महिलाओं को उपेक्षित नहीं रहने दिया जा सकता। आज की समर्थ नारी को आज ही अशिक्षा के चंगुल से छुड़ाया जाना चाहिए।

आमतौर से तीसरे प्रहर दो से पाँच तक, तीन घंटे ही प्रौढ़ महिलाओं के पास फुरसत के रहते हैं। इसी समय में हर जगह सुव्यवस्थित महिला प्रौढ़ विद्यालय चल पड़ें। इसकी सुनिश्चित योजना चल ही पड़नी चाहिए। इसके लिए जो भी साधन जुटाने आवश्यक हैं, उन्हें जुटाना समय की अनिवार्य माँग समझी जानी चाहिए। इसके लिए भावनाशील नर को तन-मन और धन तीनों ही प्रकार के सहयोग उदारतापूर्वक देने चाहिए।

जहाँ महिला संगठन हैं, उन्हें इसके लिए अच्छी-से-अच्छी व्यवस्था बनानी चाहिए। जहाँ संस्था का अपना महिला भवन बन सके, वहाँ उसके लिए प्रयत्न किया जाए। यह निर्माण मंदिर, धर्मशाला, तालाब, अन्न क्षेत्र आदि पुण्य के नाम पर किए जाने वाले

सभी निर्माणों से कहीं अधिक पुण्य और सत्परिणाम उत्पन्न करने वाला होगा। इस कारण निर्माणकर्त्ताओं को इसमें अधिक श्रेय प्राप्त होगा। उदार और प्रभावशाली लोग यदि इस निर्माण की उपयोगिता समझ सकें तो उनकी सहायता से अथवा जनसाधारण का मुट्ठी-मुट्ठी सहयोग एकत्रित करके यह निर्माण भी हर जगह संभव हो सकता है। संपन्न और भावनाशील लोगों तक यह आवाज पहुँचाई जानी चाहिए। जिनके कान में यह बात पड़े, वे यदि नारी जागरण की उपयोगिता अनुभव कर सकें तो उन्हें ऐसे निर्माणों को करने या कराने का संकल्प ले ही लेना चाहिए। उसके लिए समय एवं धन देने के लिए बढ़ी-चढ़ी उदारता का परिचय देना चाहिए। ऐसे शुभ संकल्पों में ईश्वरीय सहायता मिलती है। आदर्श एवं पुरुषार्थ का समन्वय सदा ही सफलता प्रस्तुत करता रहा है। संपन्न और पुरुषार्थी लोगों का साहस एवं उत्साह जाग पड़े तो कोई कारण नहीं कि कुछ ही समय में हर जगह एक साधनसंपन्न महिला भवन बनकर खड़ा न हो जाए।

यदि वैसा न हो सके, तो माँगकर या किराए का कोई स्थान लेकर इस नारी प्रौढ़ शिक्षा का पुनीत कार्य जल्दी-से-जल्दी चालू कर देना चाहिए। मंदिरों में, धर्मशालाओं तथा अन्य सार्वजनिक संस्थानों में ढेरों जगह खाली पड़ी रहती है। स्कूलों के कमरों का भी उपयोग इसके लिए किया जा सकता है। जहाँ वैसी सुविधा हो, वहाँ उसका भी लाभ लिया जा सकता है।

अपने प्रौढ़ महिला विद्यालयों में (१) शिक्षा (२) स्वावलंबन और (३) सर्वतोमुखी प्रगति के तीन क्रियाकलाप मिले-जुले रूप में चलने चाहिए। शिक्षा का पहला चरण निरक्षरता निवारण और दूसरा सद्ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए। जो महिलाएँ निरक्षर हैं, उन्हें साक्षर बनाया जाना चाहिए। सरकारी प्राथमिक स्कूल की पाँचवें दर्जे जितनी शिक्षा हर नारी को मिलनी ही चाहिए। इसके लिए स्थानीय प्राथमिकशालाओं में चलने वाला पाठ्यक्रम ज्यों का त्यों लिया जा

सकता है। दूसरा—ज्ञान संवर्द्धन वाला पाठ्यक्रम शिक्षितों और अशिक्षितों दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जीवन के विभिन्न पक्षों, उनकी समस्याओं और समाधानों की जानकारी देना, होना चाहिए। व्यक्ति, परिवार और समाज सभी के संबंध में तथ्य, तर्क और प्रमाण सहित शिक्षण दिया जाए। जीवन जीने की कला, बच्चों का पालन-पोषण, घर की व्यवस्था, धन का संतुलन, उसे खर्च करने का ढंग, रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाला सामान्य ज्ञान, भोजन पकाने का सुधरा हुआ ढंग, स्वास्थ्य रक्षा, शिष्टाचार, रोगियों की देखभाल, सफल दांपत्य के सूत्र, परिवार के सदस्यों में भावनात्मक एकता बनाए रखने का ढंग, अपने गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार, जीवन का लक्ष्य तथा उसे पाने का क्रम, हँसते-हँसाते जीवन जीने का दृष्टिकोण, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व बनाना, परिवार संस्था का नव-निर्माण, नारी की प्रगति कैसे हो? इसकी दिशा, संभावना और योजना, अध्यात्म का व्यावहारिक रूप जैसे अनेक विषय इस ज्ञान संवर्द्धन पाठ्यक्रम में शामिल रहने चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा के साथ-साथ गृह उद्योगों का प्रशिक्षण भी चलाया जाना चाहिए। इससे आर्थिक प्रगति के साथ-साथ और भी लाभ हैं। बुद्धि में पैनापन आता है और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में भी बहुत सहायता मिलती है। जापान कुटीर उद्योग में अग्रणी है, वहाँ हर घर एक छोटा कारखाना है। घर के सभी लोग अवकाश के समय में कुछ काम करते हैं और पैसा कमाते हैं। निठल्ले बैठने से जो तरह-तरह के दुर्गुण उत्पन्न होते हैं, उनके लिए गुंजायश ही नहीं रहती। उपार्जन की क्षमता बढ़ने से मनुष्य का आत्मविश्वास बढ़ता है और आगे बढ़ने का उत्साह उत्पन्न होता है। अपने देश में कुटीर उद्योगों के विकास की बहुत अधिक आवश्यकता है। सिलाई, बुनाई, खिलौने, टूट-फूट की मरम्मत, शाक-वाटिका तथा स्थानीय स्थिति के अनुरूप हर क्षेत्र में अनेकों उद्योग संभव हो सकते हैं। उनमें से जहाँ जिन्हें

उपयुक्त समझा जाए, वहाँ उनका इस गृह-उद्योग विभाग में समावेश किया जा सकता है।

संगीत भी इस शिक्षण में सम्मिलित रखा जाना चाहिए। सद्भाव संवेदनाओं को हुलसित करने के लिए संगीत से बढ़कर सरस-सरल और सफल माध्यम दूसरा नहीं हो सकता। इसके लिए सुगम संगीत पद्धति में गाने का तथा बजाने का जहाँ जो साज प्रचलित हो, वहाँ उन्हें बजाने का शिक्षण दिया जा सकता है। संगीत और भाषण दोनों को सिर्फ मनोरंजन कला नहीं, बल्कि जीवन की उपयोगी शक्तियाँ माना जाना चाहिए। इन दोनों का उपयोग जनमानस से अवांछनीयता उखाड़ फेंकने में एक शक्तिशाली औजार की तरह हो सकता है। हमारी प्रौढ़ पाठशालाओं में इन दोनों कलाओं का शिक्षण, इन शक्तियों का समुचित संवर्द्धन किया जाना चाहिए।

यह तो प्रौढ़ महिला विद्यालय का वह भाग हुआ जो दो से पाँच बजे के बीच तीन घंटे रोज स्कूली ढंग से पढ़ाया जाया करेगा। साक्षरता, कुटीर उद्योग, सामान्य ज्ञान, भाषण, संगीत आदि उस पाठ्यक्रम के अंग हैं, जो विद्यालय की चहारदीवारी के भीतर पढ़ाया जाना है। इससे अगला प्रशिक्षण वह है जो घर-घर जाकर जन-जन से संपर्क बनाकर दिया जाना है। संगठन, साप्ताहिक सत्संग, संस्कार, त्योहार, कथाएँ, परिवार गोष्ठी, चल-पुस्तकालय जैसी प्रचारात्मक, रचनात्मक गतिविधियाँ इसी प्रकार की हैं, जिन्हें जन-संपर्क द्वारा ही आगे बढ़ाया जा सकता है। सामाजिक कुरीतियाँ, अंध-विश्वास, गलत परंपराएँ, अनैतिकताएँ, अवांछनीयताएँ अपने समाज में इतनी अधिक हैं कि उनके विरुद्ध संघर्ष किए बिना छुटकारे का और कोई रास्ता नहीं है। जैसे-जैसे अपना संगठन मजबूत होता जाएगा, वैसे-वैसे विवाहोन्माद, दहेज, बाल-विवाह, परदा-प्रथा, मृतकभोज जैसी कुरीतियों से जूझने का मोरचा तेज करना पड़ेगा। इन सभी गतिविधियों का केंद्र अपना महिला भवन ही हो सकता है। शिक्षा, स्वावलंबन और सर्वतोमुखी प्रगति की तीनों धाराओं का उद्गम यही छोटा-सा

भवन होगा। ये तीनों धाराएँ परस्पर मिलकर पतित पावनी गंगा की तरह प्रवाहित होंगी। यह धारा सगर पुत्रों की तरह नरक की आग में जलने वाले जन-समाज को स्वर्ग जैसी परिस्थिति में बदल देने का लाभ दे सकेंगी।

### ( १८ ) सभी महिलाएँ सहयोग करें :

महिलाओं में से हर एक के पास पर्याप्त अवकाश है और साधन तथा अवसर भी। वे चाहें तो गृहस्थ के उत्तरदायित्व को सँभालते हुए समस्त नारी जाति और स्वयं के लिए भी सोच सकती हैं। समय कम मिलता हो तो अपने परिवार के अन्य लोगों को नारी जागरण की दिशा में कुछ समय लगाने और ध्यान देने की प्रेरणा दे सकती हैं। जिनके पास साधन हैं, वे उन्हें इस पुण्य प्रयोजन में लगाने की बात सोच सकती हैं। जिनके उत्तरदायित्व पूरे हो चुके, वे अपने को नारी समाज के लिए उत्सर्ग करने का साहस कर सकें तो इसमें उनका और समस्त समाज का हित साधन हो सकता है।

बड़े घरों की शिक्षित महिलाएँ जिनके घर नौकर-चाकर काम करते हैं, उनको सेवा के लिए समय निकालना चाहिए। जिनके ऊपर कोई खास जिम्मेदारी नहीं है, वे बहुत आसानी से नारी कल्याण के कार्यों में हाथ बँटा सकती हैं। खाली आलस्य में पड़े रहने से समय का उपयोग भी नहीं होता और स्वास्थ्य भी खराब होता है। समय का सदुपयोग उनकी लोकप्रियता के रूप में फलीभूत होगा। प्रतिष्ठित परिवार की महिला स्वयं अपने कार्यों से सम्मानित होकर पति की प्रतिष्ठा को दुगनी कर सकती हैं। ऐसे अवसर पर अपने समय को नारी सुधार के कामों लगाकर शिक्षित महिलाओं को लाभ उठाना चाहिए।

विधवा परित्यक्ताएँ भारभूत बनकर जीवन जीती हैं, संतान न होने कारण अथवा कुरुप होने के कारण कितनी ही बहनें पग-पग पर लांछित होती हैं। ऐसी स्थिति में कष्टदायक स्थिति की अपेक्षा नारी जागरण की तपश्चर्या में अपने आप को लगा देना अधिक

त्रेयस्कर है। किन्हीं पर भार बने रहने से तो अच्छा है और किसी का भार हलका कर देना। आत्म-हत्या जैसे धिनौने उपाय सोचने की अपेक्षा इस सेवा यज्ञ में जुट पड़ना हर दृष्टि से उपयुक्त है। जिन लड़कियों की आर्थिक कठिनाई या कुरुरूपता के कारण शादी नहीं हो सकी अथवा दूसरों के असफल विवाहित जीवन से शिक्षा लेकर अविवाहित रहना चाहती हैं वे शिक्षित कुमारियाँ यदि महिला जागरण में जुट जाएँ। तो युग की महती आवश्यकता पूरी कर सकने योग्य जनशक्ति सहज ही जुटा सकती हैं।

स्त्रियों के सुधार के पुण्य प्रयास में पढ़ी-लिखी महिलाओं, अध्यापिकाओं को पूरी तरह अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। बालिकाओं को पढ़ाने के कारण उनके परिवारों से अध्यापिकाओं का सह-संबंध होता है इस कारण घर का पुरुष वर्ग उन पर सहज विश्वास रखता है। वह सर्वथा योग्य समझेगा और उनका कभी विरोध न करेगा। अध्यापिकाओं को अपनी इस विश्वसनीय स्थिति का लाभ उठाना और उसका उपयोग घरों की पिछड़ी नारी के सुधार के रूप में करना चाहिए। अध्यापिकाएँ सीधे घरों में जाकर महिलाओं से संपर्क स्थापित कर सकती हैं। घर में पहुँचकर वे महिलाओं को शिक्षा का महत्व बताएँ और उन महिलाओं व लड़कियों को पाठशाला भेजने को प्रेरित करें, जिन्हें अभी पढ़ने नहीं भेजा है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर फीस माफी और शिक्षा सामग्री दिलाने का आश्वासन दे सकती हैं। यदि अध्यापिकाएँ घरों से लड़कियों को लाने-ले जाने का कार्य भी निश्छल सेवाभाव से करें, तो घर के लोगों पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। लड़कियों को बाहर निकालने पर संकोच करने वाली महिलाएँ उनको स्कूल भेजने को तैयार हो जाएँगी।

सेवामुक्त अध्यापिकाएँ आगे बढ़ें और अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर महिलाओं को शिक्षा का लाभ बताएँ। महिलाओं को एकत्र कर प्रातः, सायं अथवा अवकाश के अनुसार पाठशाला स्थापित करें। उन्हें स्वयं पढ़ाएँ या पढ़ाने का प्रबंध करके आगे बढ़ाने का

प्रयत्न करें। यदि कोई एक सेवानिवृत्त अध्यापिका किसी क्षेत्र में एक भी प्रौढ़ पाठशाला स्थापित कर सकी तो मानो उसने अपना स्थायी स्मारक समय की छाती पर छोड़ दिया। जो उसे न केवल इसी लोक में हर्षित करेगा वरन् परलोक में भी सुख देगा।

साक्षरता के साथ में त्योहारों, उत्सवों तथा विवाहों के अवसरों पर गाए जाने वाले सुंदर-सुंदर अर्थपूर्ण गीत सिखाए जा सकते हैं। कीर्तनों का अभ्यास कराया जा सकता है। उन्हें गृह सज्जा, गृह व्यवस्था, पारिवारिक प्रेम, शील-शालीमता, स्वच्छता तथा सफाई की शिक्षा उदाहरणों, कार्यक्रमों तथा उपदेशों द्वारा दी जा सकती है।

जिनकी पढ़ाई बीच में छूट गई है, उन लड़कियों अथवा महिलाओं को आगे की पढ़ाई के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। स्कूलों, कालेजों एवं विद्यालयों की सेवाभावी छात्राएँ अपने अध्ययन के पश्चात समय निकालकर अपने पास-पड़ोस तथा परिचितों में जाकर नारियों व लड़कियों से संपर्क स्थापित करें। अपने शालीन व्यवहार से यह छाप छोड़ें कि शिक्षा से नारी की विचार-परिधि का विकास होता है। संकीर्णता समाप्त होती है, वह कर्तव्य व अधिकारों को पहचानती है, उसका ठीक-ठीक उपयोग कर सकती है तथा शिक्षा से नारी की रूढ़-मान्यताएँ दूर होती हैं, अंध-विश्वास भागते हैं। छात्राएँ यह विश्वास भी दिलाएँ कि शिक्षा से आत्मा में प्रकाश और हृदय में बल आता है, जिससे उन्हें न तो अप्रिय परिस्थितियाँ डरा सकती हैं और न कोई धोखा दे सकता है। शिक्षा उन्हें आत्मरक्षा का बल देती है।

इस प्रकार की शिक्षाओं के साथ बड़े घरों की प्रगतिशील महिलाएँ पिछड़ी महिलाओं को विकसित करने के लिए अन्य कार्य भी कर सकती हैं। जैसे घर की व्यवस्था में दक्ष बनाना, पारिवारिक बजट बनाने की विधि सिखाना, स्वयं को तथा बच्चों को साफ-सुथरा रखने की प्रेरणा देना जैसे कार्य कर सकती हैं। महिलाओं को सभ्यता, शालीनता तथा सहनशीलता की शिक्षा दे सकती हैं। बच्चों

को अनुशासन के साथ-साथ साक्षर भी बना सकती हैं। नारी सुधार की जो भी प्रवृत्तियाँ उनकी समझ में आएँ, नारियों के बीच चला सकती हैं।

बड़े घरों की महिलाओं के अतिरिक्त साधारण घरों की प्रौढ़तथा वृद्ध महिलाएँ भी नारी जागरण के क्षेत्र में काम कर सकती हैं। वे घर-घर जाकर बहू-बेटियों को समझाने, सिखाने के साथ-साथ अपना मुख्य कार्य क्षेत्र अपनी ही जैसी बड़ी-बूढ़ियों को बनाएँ। अपने अनुभव से उन्हें उदार तथा विचारशील बनाएँ, घरों की बड़ी-बूढ़ियों तथा बहुओं के बीच सद्भावनाएँ स्थापित कराएँ। सास-बहू के स्वाभाविक झगड़े अपने अनुभव के आधार पर बंद कराएँ। अपना तथा अपने जैसे अन्य उदाहरण देकर बड़ी-बूढ़ियों को समझाएँ कि समय आने पर बहू-बेटियों को घर की जिम्मेदारी सौंपने से उनके जीवन में किस प्रकार सुख-शांति रहने लगेगी। परिवार की अधिकार-लिप्सा से मुक्त होकर वे भगवान का भजन कर सकेंगी। इस प्रकार उनका सम्मान घटने के बजाय बढ़ेगा ही। परिवार की सुख-शांति एवं मंगलकामनाओं के लिए सद्भावना तथा सहमति का महत्व बताएँ। पढ़ी हुई प्रचारिकाएँ उपयोगी पुस्तकें सुनाएँ तथा वार्तालाप करें। इस प्रकार से वृद्ध प्रचारिकाएँ घर की रुद्धिवादिनी वृद्धाओं में उदार तथा प्रगतिशील वृत्तियों को जगाकर महिला कल्याण के मार्ग में आने वाले बहुत से अवरोधों को दूर कर सकती हैं।

( १९ ) महिला वर्ग द्वारा सद्ज्ञान का प्रचार प्रसार : निरक्षर महिलाएँ साक्षर बनने का प्रयत्न करें और पढ़ी-लिखी ज्ञान संपदा बढ़ाने के लिए उपयोगी साहित्य का अध्ययन करें। ऐसा साहित्य जो अनुभवी, युगद्रष्टा के द्वारा लिखा गया हो, व्यावहारिक शिक्षा देने में समर्थ हो, पढ़ना चाहिए। हर जगह छोटे-छोटे पुस्तकालयों की स्थापना हो, जिनमें महिला समस्या के समाधान प्रस्तुत करने वाला उपयोगी साहित्य पर्याप्त मात्रा में हो।

**ज्ञानयज्ञ की योजनाएँ** :—दीवार लेखन, स्टीकर अभियान, झोला-पुस्तकालय, माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय आदि कार्यक्रमों द्वारा जनसाधारण की मानसिकता एवं सत्प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए महिलाएँ इन कार्यों को हाथ में ले सकती हैं। कुछ आकर्षक स्टीकर्स किसी के भी ड्राइंगरूम, रसोई-घर, बैठक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान की शोभा को बढ़ाने के लिए लगाए जा सकते हैं। प्रभावशाली सद्वाक्यों के स्टीकर्स लेकर यदि कोई महिला घरों में जाकर बहनों से संपर्क करें, इन्हें खरीदकर लगाने वालों की कमी नहीं रहेगी। बस स्टॉप, कार्यालयों, विद्यालयों एवं मंदिरों में लगा दिए जाएँ तो बहुत काम हो सकता है।

युग ऋषि द्वारा रचित साहित्य का महत्व शाश्वत-सनातन है। यह कभी पुराना नहीं होता, पुरानी पत्रिकाएँ अथवा पुस्तकों पर ज्ञानयज्ञ योजना की शिल्प लगाकर महिलाएँ हर वर्ग को पढ़ने को देती रहें।

झोला पुस्तकालय चलाना सबसे बड़ा तप, दान, पुण्य, परमार्थ एवं सबसे बड़ी साधना है। इस योजना में कुछ दिन के लिए एक व्यक्ति को पुस्तक पढ़ने के लिए दे सकती हैं और कुछ दिन पश्चात वापस लेकर दूसरी पुस्तकें दे दें। इस योजना को कोई भी व्यक्ति अथवा महिला आसानी से चला सकते हैं। सभी बहनों को झोला पुस्तकालय अवश्य चलाना चाहिए। इसी प्रकार माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय योजना में भी पुस्तक पर अपने नाम-पते की मुहर लगाकर अपने मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों एवं ग्राहकों को भेंट स्वरूप दे सकती हैं। वर्ष-त्योहार, जन्मदिन, विवाहदिन आदि के अवसर पर वितरित कर सकती हैं।

परमपूज्य गुरुदेव ने मई १९८१ में लिखा है कि युग निर्माण योजना पत्रिका को धरती पर स्वर्ग के अवतरण की दिशाधारा, कार्य-पद्धति एवं संभावना को सर्वसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत करने का कार्य सौंपा गया है। सभी बहनों से हमारा अनुरोध है कि युग

निर्माण योजना पत्रिका की स्वयं सदस्य बनें, दूसरों को प्रेरणा देकर अधिकाधिक सदस्य बनाएँ एवं अपनी पत्रिका दूसरों को पढ़ाने का प्रयास करती रहें, ताकि नई बहनें मिशन की कार्यकर्त्री बन सकें। वार्षिक शुल्क ४२), आजीवन ७५०) रुपया।

### प्रतिभाओं से अनुरोध :

यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि जाग्रत और जीवंत नारी को नवयुग में अति महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व संभालने हैं। जाग्रत महिलाएँ अगले दिनों देश की आर्थिक उन्नति में बढ़-चढ़कर योगदान देने की स्थिति में होंगी। कुटीर उद्योगों का संचालन प्रायः उसी के हाथ में होगा। पुरुष वर्ग अधिक कड़े परिश्रम के काम अपने जिम्मे रखेंगे और गृह व्यवस्था, शिशुपालन के साथ-साथ नारी कुटीर उद्योगों को संभाल लेगी। घर में रहते हुए, ऐसा करना उसके लिए सरल पड़ेगा। सहकारी समितियाँ यदि उन्हें कच्चा माल देने और बने माल को खरीदकर बजार में खपाने का उत्तरदायित्व अपने जिम्मे लें तो छोटे-बड़े असंख्य गृह-उद्योग पनपते हुए दिखाई देंगे। नारी की बेकारी, बेबसी और गरीबी तो इसी उपाय से दूर हो सकती है। परिवार के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत खुल सकता है। देश की संपन्नता में निश्चित रूप से अभिवृद्धि होगी।

राजनैतिक क्षेत्र में इन दिनों जो आपाधापी चल रही है, उसके समाधान का सहज उपाय यह है कि शासन-प्रशासन में नारी को भी चुनकर भेजा जाए। उनकी जन्मजात सहदयता एवं उदारता का समावेश जब राजनीति में होगा, तो राजनीति भी धर्मनीति की तरह पवित्र बनकर रहेगी। पुरुष ने चिरकाल से शासन-सूत्र संभाला है। अब उसके अनुभव नारी को देने के लिए उसे अपनी पकड़ कुछ ढीली करनी चाहिए। टाउन एरिया, म्यूनिसिपल बोर्ड, जिला परिषद, विधान सभा एवं लोक सभा आदि में उसे स्थान देना चाहिए, ताकि इस आशा का उदय हो सके कि सत्ता किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं

---

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ / ४४

है। उनके संचालन-निर्वाह का उत्तरदायित्व दूसरों को उठाने देने वाली उदारता का प्रारंभ हो गया।

साहित्य एवं कला क्षेत्र में नारी का प्रवेश होगा, तो निश्चित रूप से वह अपनी शालीनता सुरक्षित रखेगी। उसकी कलम से अश्लीलता, कामुकता और अपराधी वृत्तियों उभारने वाला कुत्सित साहित्य नहीं लिखा जा सकता। वह जो कुछ लिखेगी, अपने पिता, पति, भाई और पुत्र में सद्भावना उत्पन्न करने वाला ही हो सकता है। प्रेस, प्रकाशन, पत्रिकारिता, साहित्य विक्रय के क्षेत्र में नारी को वर्चस्व इसलिए सौंपा जाना चाहिए कि आज इन क्षेत्रों में घुसी हुई विकृतियों का निराकरण संभव हो सके।

प्रगतिशील लेखक वर्ग से अनुरोध किया जाए कि वे नारी उत्थान की समस्या के ऊपर ऐसे लेख लिखना प्रारंभ करें, जो नारी के प्रति श्रद्धा, पवित्रता और शालीनता की दृष्टि उभारें। उन्हें देश की सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराएँ।

साहित्य प्रकाशकों और चित्र प्रकाशकों से कहा जाए कि वे नारी उत्कर्ष की आवश्यकता पूरी करने वाला साहित्य छापने और बनाने का साहस जुटाएँ। उत्तेजक और अश्लील चित्रण से वे हाथ खींच लें, भले ही उसमें लाभ की दृष्टि से कुछ कमी रहने लगे।

पत्र-पत्रिकाओं के संचालकों, संपादकों से आग्रह किया जाए कि नारी के सामाजिक उत्कर्ष की आवश्यकता पर ध्यान दें और इसके लिए उपयोगी सामग्री नियमित रूप से सभी भाषाओं में प्रकाशित करें। यह एक पवित्र सामाजिक कर्तव्य समझकर हाथ में लेना चाहिए।

भावनाएँ उभारने की दृष्टि से गीतों और कविताओं का गीतकार ऐसा सृजन करें, जो नारी समस्याओं के विभिन्न पक्षों पर जन-साधारण का ध्यान आकर्षित कर सकें।

फिल्म निर्माताओं से अनुरोध किया जाए कि वे नारी-दुर्गति के प्रति करुणा, प्रतिबंधों के प्रति आक्रोश और परिवर्तन का मार्गदर्शन

करने वाली कहानियाँ बनाएँ और दिखाएँ। अगले दिनों नारी समस्या का समाधान जैसे विषयों पर बनी फिल्मों का स्वागत होगा, उसमें लाभ भी रहेगा और निर्माताओं को समाज निर्माण में योगदान देने का श्रेय भी मिलेगा।

सरकारी प्रचार-तंत्र बहुत सम्पृष्ठ और संपन्न है, रेडियो और टेलीविजन आदि के माध्यम से नारी समस्या की ओर ध्यान देने के लिए जनमानस तैयार किया जा सकता है। विज्ञापनों का प्रयोग अधिकाधिक नारी उत्कर्ष का वातावरण बनाने के लिए हो सके, तो नारी वर्ग को बहुत राहत मिल सकती है।

नारियों को मानव की तरह जीने का अधिकार दिलाने के लिए पढ़ी-लिखी तथा प्रतिभाशाली नारियों को प्रयास करना होगा। कोई महिला, जो स्वयं वकील है यां पुलिस में है या जज है या उसका पति उच्च पद पर है, दीन-हीन स्थिति वाली स्त्रियों का साथ दे, तो अत्याचारी पुरुषों के हौसले पस्त हो सकते हैं। वे अपराधी व्यक्ति को ऐसा दंड दिला सकती हैं कि आगे किसी को इस प्रकार नारी पर अत्याचार करने का साहस न हो। कितने दुःख की बात है कि जिस देश में नारी की पूजा की जाती थी, वहीं आज उसे जलाया जा रहा है।

संसार में यह देखा जा सकता है कि छोटा दीपक जलता है तो हवा का झोंका उसे बुझा देता है और कहीं आग लगी हो और उस समय आँधी आ जाए तो अग्नि प्रचंड हो जाती है। इसलिए देश की जाग्रत बहनो ! आगे बढ़ो और अपने उत्तरदायित्व को समझो। प्रकृति का यही नियम है कि दुर्बल को वह समाप्त कर देती है और सबल को सहारा देती है। इसीलिए आप स्वयं समर्थ बनकर गिरी हुई असहाय बहनों को सहारा दो, यही इस समय की पुकार है। स्वयं को पहचानो और अपनी शक्ति को जगाओ।



---

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

# युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

## नारी जागरण आंदोलन का संकल्प पत्र

मैंने नारी जागरण आंदोलन के समस्त २० कार्यक्रमों को भलीभाँति दो बार पढ़कर / सुनकर समझ लिया है। मेरी इन कार्यक्रमों के प्रति सच्ची निष्ठा है। मैं अपने क्षेत्र में अपनी सहयोगी बहनों का संगठन तैयार करूँगी और निम्नलिखित कार्यक्रमों को अपने संगठन के द्वारा अवश्य चलाऊँगी। मेरा यह संकल्प पत्र ऋषि युग्म के प्रतीक प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा पर समर्पित कर दिया जाए। मैं ऋषिसत्ता को विश्वास दिलाती हूँ कि निम्न कार्यक्रमों को पूरी श्रद्धा-निष्ठा के साथ चलाऊँगी।

- १.
- २.
- ३.
- ४.
- ५.
- ६.
- ७.
- ८.
- ९.
- १०.

— — — यहाँ से फाइकर, भारकर युग निर्माण योजना, मथुरा-३  
— — — यहाँ से फाइकर, भारकर युग निर्माण योजना, मथुरा-३

## परिचय-विवरण

नाम कु./श्रीमती ——————

पिता/पति का नाम श्री ——————

मकान नं. ——————

मुहल्ला/कालोनी ——————

ग्राम ——————

पोस्ट ——————

जिला ——————

प्रांत ——————

पिन ——————

फोन नं. ——————

शिक्षा ——————

व्यवसाय ——————

जन्मतिथि —————— विवाह तिथि ——————

मिशन से कब से जुड़ी हैं ——————

अब तक किए गए कार्यों का विवरण ——————